



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग 1—खण्ड 1
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 55]
No. 55]

नई दिल्ली, बुधस्वतिवार, फरवरी 23, 2012/फाल्गुन 4, 1933
NEW DELHI, THURSDAY, FEBRUARY 23, 2012/PHALGUNA 4, 1933

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी तथा संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 फरवरी, 2012

अंतिम जांच परिणाम

(न्यू शिपर समीक्षा)

विषय : बुल्गारिया, चीन जन.गण., मलेशिया, सिंगापुर और दक्षिण कोरिया से प्रि-सेंसिटाइज्ड पॉजिटिव ऑफ सेट एल्युमिनियम प्लेटों के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की न्यू शिपर समीक्षा ।

सं. 15/13/2009-डीजीएडी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली या नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

पृष्ठभूमि एवं अपनायी गई प्रक्रिया

2. मै. कोडेक (चीन) ग्राफिक कम्युनिकेशंस कं. लि. (चीन जन.गण. का उत्पादक/निर्यातक) ने सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 के नियम 22 के अंतर्गत न्यू शिपर समीक्षा हेतु एक आवेदन दायर किया और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए दिनांक 23 अगस्त, 2007 के अंतिम जांच परिणाम के अनुसरण में निर्दिष्ट प्राधिकारी से चीन जन.गण. के मूल की या वहां से निर्यातित प्रि-सेंसिटाइज्ड पॉजिटिव ऑफ सेट एल्युमिनियम प्लेटों के आयातों पर दिनांक 25 सितम्बर, 2007 की सी.शु. अधिसूचना सं. 108/2007 के तहत लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की "न्यू शिपर समीक्षा" शुरू करने का अनुरोध किया ।

3. आवेदक ने दावा किया है कि चीन जन.गण. के संबद्ध उत्पाद के जिन निर्यातकों/उत्पादकों पर इस समय पाटनरोधी उपाय लागू है आवेदक इनमें से किसी से भी संबंधित नहीं था । इसके अलावा, उसने यह दावा किया कि उसने मूल जांच अवधि अर्थात् 1 अप्रैल, 2005 से 31 मार्च, 2006 के दौरान संबद्ध उत्पाद का निर्यात नहीं किया था । आवेदक ने आगे यह दावा किया कि आवेदक कंपनी वर्ष 2005 में निगमित हुई थी और उसने वर्ष 2007 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया था और इसलिए वह मूल जांच की जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं कर सकती थी; प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना की प्रथमदृष्टया जांच के बाद और प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के उपबंधों के अनुसार न्यू शिपर समीक्षा जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए इसे पर्याप्त माना ।

4. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 8 जनवरी, 2010 की अधिसूचना सं. 15/13/2009-डी जी ए डी के तहत पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत न्यू शिपर समीक्षा शुरू की थी । प्राधिकारी ने भारतीय पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अनुसार शुरू की गई समीक्षा पूरी होने तक चीन जन.गण. की मै. कोडक (चीन जन.गण.) ग्राफिक कम्प्युनिकेशंस कं. लि. (उत्पादक/निर्यातक) द्वारा प्रिसेंसिटाइज्ड पॉजिटिव ऑफसेट एल्युमिनियम प्लेटों के सभी निर्यातों के अंतिम निर्धारण की सिफारिश की थी । इसे 19 मार्च, 2010 की सी.शु. अधिसूचना सं. 35/2010-सी.शु. के तहत अधिसूचित किया गया था । वर्तमान न्यू शिपर समीक्षा में घरेलू उद्योग मै. टैनोवा इमेजिंग सिस्टम्स लि. है ।

5. इस न्यू शिपर समीक्षा में जांच अवधि 1 अक्टूबर, 2009 से 31 मार्च, 2010 (6 माह) तक की है ।

6. प्राधिकारी ने न्यू शिपर समीक्षा जांच की शुरुआत के बारे में निर्यातक ने देश को सूचित किया और सभी हितबद्ध पक्षकारों को जांच अवधि की समाप्ति से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों को अवगत कराने का अवसर प्रदान किया ।

7. प्राधिकारी ने संगत सूचना मांगने के लिए आवेदक से निर्यातक प्रश्नावली के रूप में ब्यौरे प्राप्त किए । उक्त उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियों में प्रचालन करने का दावा करते हुए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली के रूप में सूचना भी दायर की ।

8. प्राधिकारी ने 8 जुलाई, 2010 को आयोजित मौखिक सुनवाई में सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया । जो पक्षकार सुनवाई में उपस्थित हुए थे और अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त किए थे, उनसे लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था । पक्षकारों को विरोधी पक्षकारों द्वारा अपने अनुरोधों में व्यक्त विचारों की प्रतियों को लेने और अपने उत्तर तथा अनुरोध प्रस्तुत करने की भी सलाह दी गई थी। तत्पश्चात् आवेदक और किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार से टिप्पणियां, यदि कोई हों, आमंत्रित करते हुए प्रकटन विवरण दिनांक 1 नवंबर, 2010 को जारी किया गया था ।

9. वर्तमान समीक्षा में अंतिम जांच परिणाम जारी करने से पूर्व निर्दिष्ट प्राधिकारी के रूप में एक नए पदधारी ने कार्यभार ग्रहण किया था। अतः उच्चतम न्यायालय द्वारा चीन जन.गण. से नायलॉन टायर कॉर्ड फैब्रिक्स से संबंधित मामले में प्रदत्त दिशा निर्देशों के अनुसार नए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 7 अप्रैल, 2011 को दूसरी मौखिक सुनवाई की। दूसरी मौखिक सुनवाई के बाद आवेदक तथा घरेलू उद्योग ने पुनः अपने अनुरोध प्रस्तुत किए जिन पर जहां संगत पाया गया, वहां विधिवत विचार किया गया था और उसके बाद आवेदक तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों से टिप्पणियां, यदि कोई हों, आमंत्रित करते हुए दूसरा प्रकटन विवरण 8 जुलाई, 2011 को जारी किया गया था। आवेदक तथा घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों पर अंतिम जांच परिणाम में, जहां संगत पाया गया है, विधिवत रूप से समुचित विचार किया गया है।

10. प्राधिकारी ने आवेदक न्यू शिपर के रिकॉर्डों का सत्यापन चीन जन.गण. स्थित उनके कारखाना परिसर तथा निगम कार्यालय में किया।

11. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदत्त सूचना/किए गए अनुरोधों के अगोपनीय रूपांतरण वाली सार्वजनिक फाइल उपलब्ध रखी।

12. *** वर्तमान अंतिम जांच परिणाम में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

13. मूल जांच में विचाराधीन उत्पाद "प्रिन्सैसिटाइज्ड पॉजिटिव ऑफसेट एल्युमिनियम प्लेटें" (जिन्हें "पी एस प्लेटें" या संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) हैं संबद्ध वस्तु का प्राथमिक उपयोग मुद्रण उद्योग में किया जाता है। एल्युमिनियम ऑफसेट प्लेटों के गुणवत्ता, गति के अनुकूल और प्रयोक्ताओं की जरूरतों तथा उनके पास उपलब्ध इमेजिंग प्रौद्योगिकी के अनुसार तैयार की जाने वाली प्लेटों के कई प्रकार होते हैं अर्थात् नॉन-सैसिटाइज्ड ग्रेड प्लेटें, प्री-सैसिटाइज्ड प्लेटें (पॉजिटिव तथा नेगेटिव कार्य) और डिजिटल प्लेटें (थर्मल या वाइलेट या यू.वी. सैसिटिव)। संबद्ध वस्तु की मोटाई 0.15 मि.मी. से 0.40 मि.मी. के बीच है। इस न्यू शिपर समीक्षा में विचाराधीन उत्पाद (प्री सैसिटाइज्ड पॉजिटिव ऑफसेट एल्युमिनियम प्लेटें हैं जिनकी मोटाई दोनों ओर 0.0.3 मि.मी. के अंतर के साथ 0.15 मि.मी. से 0.40 मि.मी. तक है) जैसा कि मूल जांच में निर्धारित किया गया है। तथापि, विचारधाराधीन उत्पाद में नेगेटिव प्लेटें तथा डिजिटल प्लेटें, नेगेटिव ऑफसेट प्लेटें और "दानों ओर 0.0.3 मि.मी. के अंतर के साथ 0.15 मि.मी. से 0.40 मि.मी. तक की मोटाई की प्रि-सैसिटाइज्ड पॉजिटिव ऑफसेट एल्युमिनियम प्लेटों" से इतर सभी प्लेटें शामिल नहीं हैं।

14. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु के बारे में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई तर्क नहीं दिया है। यह नोट किया जाता है कि आवेदक मै. कोडक (चीन जन.गण.) ग्राफिक कम्युनिकेशंस कं. लि. ने यह दावा किया है कि उसके द्वारा उत्पादित और निर्यातित वस्तु नियमों के अर्थ के

भीतर है। पूर्वोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि विचाराधीन उत्पाद वहीं है जैसा कि मूल जांच में माना गया है अर्थात् सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 84 के अंतर्गत वर्गीकरणीय "दानों ओर 0.0.3 मि.मी. के अंतर के साथ 0.15 मि.मी. से 0.40 मि.मी. तक की मोटाई की प्रि-सेंसिटाइज्ड पॉजिटिव ऑफसेट एल्युमिनियम प्लेटें" हैं।

15. संबद्ध वस्तु सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय-84 के उपशीर्ष 84425020 के अंतर्गत आती है। तथापि यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

समीक्षा हेतु हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार:

आवेदक के विचार

16. 8 जुलाई, 2010 की सार्वजनिक सुनवाई के बाद आवेदक ने अपने लिखित अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ ये तर्क दिए हैं कि:

i. पृथक पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु वर्तमान न्यू शिपर समीक्षा याचिका मै. कोडक (चीन ग्राफिक कम्युनिकेशंस कं. लि., चीन जन.गण. (उत्पादक तथा निर्यातक) ने दायर की है।

ii. आवेदक ने डब्ल्यू टी ओ पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 9.5 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 पर भरोसा किया है और इस विधिक अपेक्षा का अनुरोध किया है कि आवेदक ने मूल जांच अवधि में भारत को उत्पाद का निर्यात नहीं किया है तथा आवेदक ऐसे निर्यातक देश के किसी निर्यातक या उत्पादक से संबंधित नहीं है जिसमें संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लागू है।

iii. वर्तमान मामले में इस आरोप का कोई आधार नहीं है कि आवेदक या उसके समूह की कोई कंपनी लकी ग्रुप या सेकेंड फिल्म कंपनी से संबंधित है। कोडक ने पूर्व में लकी फिल्म कं. (न कि लकी ग्रुप) में 20% शेयर का निवेश किया था। लकी फिल्म कं. लकीग्रुप की एक सहायक कं. है। इसके अलावा, सेकेंड फिल्म प्लांट लकी ग्रुप की एक सहायक कंपनी है। तथापि, लकी फिल्म में 20% निवेश मात्र वित्तीय निवेश था और कोडक में कोई नियंत्रणकारी हित नहीं दिया गया था जैसा कि लकी फिल्म कंपनी द्वारा जारी सार्वजनिक सूचना से भी स्पष्ट होता है। वस्तुतः यद्यपि कोडक को निदेशक मंडल में एक जगह दी गई थी तथापि कोडक तथा लकी फिल्म के बीच इस आशय का स्पष्ट समझौता था कि कोडक का निदेशक लकी फिल्म के दैनिक प्रचालनों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा। अतः कोडक और उसके निदेशक या बोर्ड में कोई नियंत्रणकारी अधिकार नहीं था, केवल औपचारिकता थी।

iv. आवेदक ने लकी ग्रुप के साथ अपने संबंध को स्पष्ट किया है और इस मुद्दे पर स्थिति पुख्ता करने के लिए आवेदक ने सर्कुलर वीविंग मशीन के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी के तर्काधार पर

भरोसा करने की मांग की है । आवेदक ने यह दोहराया है कि लकी ग्रुप पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है ।

v. आवेदक ने अत्यधिक गोपनीयता का कोई दावा नहीं किया है और विशिष्ट मुद्दों पर गोपनीयता का सही दावा किया है ।

vi. आवेदक ने स्वयं के लिए "बाजार अर्थव्यवस्था" का दावा किया है ।

vii. आवेदक ने दावा किया है कि ई एल पी के पास सुनवाई में उपस्थित होने के लिए घरेलू उद्योग की ओर से कोई प्राधिकार नहीं है और उसे अनुरोध करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए ।

viii. आवेदक ने दावा किया है चूंकि लिखित अनुरोध ई एल पी द्वारा जांच की शुरुआत के लगभग दो माह बाद दायर किए गए हैं, इसलिए प्राधिकारी को उन अनुरोधों पर ध्यान नहीं देना चाहिए ।

घरेलू उद्योग के विचार :

17. घरेलू उद्योग में, टैकनोवा इमेजिंग सिस्टम ने 8 जुलाई, 2010 की सार्वजनिक सुनवाई के बाद अपने लिखित अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित तर्क दिए हैं कि:

i. यह न्यू शिपर समीक्षा की शुरुआत कानून के अनुपालन में नहीं है । विनिर्माता (कोडक, चीन), निर्यातक (कोडक, सिंगापुर) और आयातक (कोडक, इंडिया) मूल जांच से विनिर्माता, निर्यातक और आयातक से संबंधित हैं । संबंध और साक्ष्य का ब्यौरा उपलब्ध कराया गया है ।

ii. कोडक (चीन) कंपनी लिमिटेड (के सी एल) और कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट लिमिटेड (के आई सी एल) ईस्टमैन कोडक की प्रमुख सहायक कंपनियां हैं । के सी एल तथा के आई सी एल के संयुक्त रूप से कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशन्स लि. (के जी सी सी एल) अर्थात् प्रत्यक्ष न्यू शिपर में 100% शेयरधारिता है । अतः ईस्टमैन कोडक और के जी सी सी एल स्पष्ट रूप से संबद्ध कंपनियां हैं । ईष्टमैन कोडक ने मूल जांच अवधि के दौरान लकी फिल्म कंपनी (एल एफ सी) में भी 20% शेयर धारित किए थे और एल एफ सी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी सेकेंड फिल्म प्लांट ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था परंतु जांच में प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया ।

- iii. ईस्टमैन कोडक का नवंबर, 2003-नवंबर, 2007 तक एल एफ सी (जो लकी ग्रुप की स्वामित्व वाली कंपनी है) में 20% दावा रहा। एल एफ सी की पूर्ण स्वामित्व वाली 3 कंपनियां हैं - सकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी), लकी रिसर्च इंस्टीट्यूट (एल आर आई) और लकी शंघाई पेपर मिल (एस एस पी एम)। एस एफ सी ने मूल जांच अवधि में भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है।
- iv. आरोपित न्यू शिपर ने यह कहते हुए कोडक की प्रत्येक कंपनी के साथ संबंध तय करने वाली तालिका को समायोजित करने की मांग की है कि यह वैबसाइट पर उपलब्ध है जो वस्तुतः उपलब्ध नहीं है और यह दोहराया है कि कोडक सिंगापुर तथा कोडक इंडिया एक-दूसरे से संबद्ध हैं और यह भी कि ये उसी मूल कंपनी के नियंत्रण में हैं।
- v. न्यू शिपर समीक्षा के मामले में न केवल नियंत्रण अपितु पक्षकारों के बीच संबंध भी निर्णायक होता है। मुख्य जांच यह होती है कि किसी पक्षकार को अपने खुद के गलत कार्य से आर्थिक लाभ नहीं लेना चाहिए। इस विषय में कोई विवाद नहीं है कि यद्यपि, लकी ग्रुप में उसकी शेयरधारिता और खासकर उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी सकेंड फिल्म कंपनी में शेयरधारिता है। तथापि, कोडक ग्रुप ने भारत में पाटन से आर्थिक लाभ कमाया है। इसके अलावा इसने मूल कार्रवाई में भाग नहीं लिया और यह भारतीय पाटनरोधी प्राधिकारी से छूट की मांग करते हुए न्यू शिपर की आड़ में उपस्थित हो गया है।
- vi. संबद्ध देश को "बाजार अर्थव्यवस्था" के रूप में विचार करने हेतु न्यू शिपर के दावे के संबंध में आवेदक का दावा पाटनरोधी नियमावली, 1995 के अनुबंध-1 के नियम 8 में यथापेक्षित बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान करने के आवश्यक मानदंड को पूरा नहीं करता है तथा यह भी कि आवेदक ने ऐसे किसी दावे को न्यायोचित ठहराने के लिए अपेक्षित सूचना प्रदान नहीं की है और न ही यह सार्वजनिक क्षेत्रों में उपलब्ध है और उसने न्यू शिपर द्वारा रिकॉर्ड में उपलब्ध कराए जाने पर ऐसी सूचना का उत्तर देने की अनुमति मांगी है।
- vii. आवेदक द्वारा कुछेक मुद्दों के बारे में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया जा रहा है और ऐसी अत्यधिक गोपनीयता से इस कार्रवाई में उचित ढंग से भाग लेने में घरेलू उद्योग मै.टैकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स की क्षमता बाधित हो रही है। गोपनीयता के मुद्दे पर आरोपित न्यू शिपर ने मै.टैकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स के दिनांक 7 जुलाई, 2010 के पत्र द्वारा उठाए गए कुछ मुद्दों का संबंधित उत्तर दिया है। मै. टैकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स ने यह अनुरोध किया है कि खासकर ऐसे किसी पत्र के बारे में गोपनीयता का दावा करना पाटनरोधी नियमों के अधिकारातीत है और रिलायंस इंडस्ट्रीज बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी, 2006 (202) ई एल टी 23 (एस सी) में अनुपात के विपरीत है।

viii. घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हुए ई एल पी ने इस बात से जोरदार ढंग से इंकार किया है कि उसके पास प्रतिनिधित्व करने का कोई प्राधिकार नहीं है और उसने 12 जनवरी, 2010 के प्राधिकार पत्र को रिकॉर्ड में उपलब्ध कराया है कि टैकनोवा इमेजिंग सिस्टम्स ने ई एल पी को यह पत्र जारी किया है। ई एल पी ने यह भी स्पष्ट किया है कि इसे 13 जनवरी, 2010 के पत्र द्वारा प्राधिकारी को भेजा गया है।

ix. प्राधिकारी वर्तमान मामले में ई एल पी के अनुरोधों को सरसरी तौर पर रद्द या अस्वीकृत न कर सकेगा और प्राधिकारी ने समय के भीतर हितबद्ध पक्षकार द्वारा किए गए अनुरोध को समुचित रूप से स्वीकार किया है और उसने ऐसा करने में त्रुटि नहीं की है। इसने निर्दिष्ट प्राधिकारी बनाम हलधर टोप्सो: 2000 (120) ई एल टी 11 (एस सी सी) तथा सर्टेन हॉट रोल्ड स्टील उत्पाद-डब्ल्यू टी/डी एस 184/एबी/आर के बारे में अमरीका-पाटनरोधी उपाय में डब्ल्यू टी ओ डी एस पी रिपोर्ट एवं अर्जेन्टीना से आयल कंट्री टेब्यूलर गुड्स पर अमरीका-पाटनरोधी उपायों की निर्णायक समीक्षा-अपीलीय निकाय की रिपोर्ट-डब्ल्यू टी/डी एस 268/ए बी /आर पर भरोसा किया है।

आवेदक द्वारा पहली और दूसरी मौखिक सुनवाईयों के बाद तथा पहले और दूसरे प्रकटन विवरणों के बाद व्यक्त किए गए विचार/अनुरोध

18. पहली और दूसरी मौखिक सुनवाईयों के बाद तथा पहले और दूसरे प्रकटन विवरणों के बाद आवेदक के अनुरोध निम्नानुसार हैं :-

(i) आवेदक इस बात से सहमत नहीं हैं कि वह पाटनरोधी शुल्क के अधीन किसी कंपनी से संबंधित है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जारी दस्तावेजों में गंभीर तथ्यात्मक तथा विधिक त्रुटियां निहित हैं जिन पर प्राधिकारी द्वारा पुनर्विचार अपेक्षित है। यह तथ्यों को गलत ढंग से समझना है कि :

- (क) ईष्टमैन कोडक के नवंबर, 2003-सितंबर, 2007 तक लकी फिल्म कंपनी (एल एफ सी) में 20% शेयर थे। यह कोडक की 2003 को समाप्त रिपोर्ट से पुष्ट होता है।
- (ख) एल एफ सी की पूर्ण स्वामित्व वाली 3 सहायक कंपनियां हैं - सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी), लकी रिसर्च इंस्टीट्यूट (एल आर आई) और लकी शंघाई पेपर मिल (एल एस पी एम)।
- (ग) एस एफ सी ने जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात किए हैं।
- (घ) कोडक (चीन) कंपनी लिमिटेड (के सी एल) तथा कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट लिमिटेड (के आई सी एल) ईष्टमैन कोडक की प्रमुख सहायक कंपनी हैं जबकि के सी एल तथा के आई सी एल के कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशंस लिमिटेड (के जी सी सी एल) अर्थात् प्रत्यक्ष न्यू शिपर में संयुक्त रूप से 100% शेयर हैं। अतः ईष्टमैन

कोडक तथा के जी सी सी एल स्पष्ट रूप से संबंधित कंपनियां हैं । जांच अवधि के दौरान ईष्टमैन कोडक का एलएफसी में 20% स्वामित्व भी था और एल एफ सी (अर्थात् एस एफ सी) की पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी ने भारत को निर्यात किया परंतु उसने जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी को सहयोग नहीं किया ।

(ii) अतः प्राधिकारी ने किसी आधार के बिना यह निर्णय लिया है कि सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) लकी फिल्म कंपनी की पूर्ण स्वामित्व वाली एक सहायक कंपनी है और दोनों को पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अनुसार संबंधित कंपनियां मान लिया ।

(iii) वर्तमान मामले के सही तथ्य अलग हैं जो निम्नानुसार हैं :-

(क) लकी फिल्म ग्रुप कार्पोरेशन (लकी ग्रुप) नियंत्रक कंपनी है । लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड (एल एफ सी) विचाराधीन उत्पाद में शामिल नहीं है और वह लकी ग्रुप की एक सहायक कंपनी है जिसका नियंत्रणकारी स्वामित्व है ।

(ख) सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) लकी ग्रुप कार्पोरेशन (लकी ग्रुप) की 100% पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है जो विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री में शामिल है । एस एफ सी ने मूल जांच अवधि में भारत को निर्यात किया है ।

(ग) कोडक (चीन) कंपनी लिमिटेड (के सी एल) तथा कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट लिमिटेड (के आई सी एल) ईष्टमैन कोडक की प्रमुख सहायक कंपनियां हैं जबकि के सी एल तथा के आई सी एल के संयुक्त रूप से कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशंस लिमिटेड (के जी सी सी एल) अर्थात् प्रत्यक्ष न्यू शिपर में संयुक्त रूप से 100% शेयर हैं ।

(घ) ईष्टमैन कोडक के कोडक (चीन) लि. (के सी एल) तथा कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट लिमिटेड (के आई सी एल) के जरिए लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड (एल एफ सी) में 20% शेयर हैं ।

iv. वर्तमान मामले में प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख), उसकी प्रासंगिकता और प्रयोज्यता की गलत व्याख्या की है । प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि घरेलू उद्योग की पुष्टि करने के लिए नियम 2(ख) में उल्लिखित संबंध विशिष्ट है और उसका नियम 22 के प्रयोजनार्थ संबंध की पुष्टि से कोई लेना-देना नहीं है । प्राधिकारी ने आगे यह नोट किया है कि यदि नियम 2(ख) में उल्लिखित संबंध की व्याख्या लागू की जाती है तो भी संबंध की पुष्टि होती है । निकाला गया निष्कर्ष तथ्यतः और विधितः गलत है एवं इस संबंध में विगत में स्थापित परंपरा के प्रतिकूल है । नियम 2(ख) में परिभाषित संबंध की व्याख्या में निम्नानुसार उल्लेख है :-

" (i) उत्पादकों को केवल उसी स्थिति में निर्यातकों या आयातकों से संबंधित माना जाएगा यदि,-

(क) उनमें से कोई एक दूसरे पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण रखता हो; अथवा

- (ख) दोनों ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा नियंत्रित हों; अथवा
 (ग) दोनों मिलकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे व्यक्ति को नियंत्रित करते हों
 बशर्ते इस बात पर विश्वास करने या आशंका करने का आधार हो कि उनका संबंध का प्रभाव ऐसा है जिससे उत्पादक असंबंधित उत्पादकों से अलग प्रकार का व्यवहार करते हों ।
- (ii) किसी उत्पादक को दूसरे उत्पादक पर नियंत्रण रखने वाला तभी माना जाएगा जब उत्पादक उस अन्य उत्पादक पर दबाव डालने या निर्देश देने की विधिक या प्रचालनात्मक स्थिति में हो ।"

v. प्राधिकारी ने नियम 2(ख) के अनुसार संबंध की जांच और पुष्टि नहीं की है और उसने आवेदक के प्रमुख विधिक एवं तथ्यात्मक अनुरोधों की अनदेखी करते हुए कोई कारण बताए बिना पूर्ववर्ती निष्कर्ष को दोहराया है । प्राधिकारी ने किसी आधार के बिना निम्नानुसार माना है :-

(क) ईष्टमैन कोडक और याचिकाकर्ता अर्थात् मै. कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशन्स कंपनी लिमिटेड स्पष्ट रूप से एक दूसरे से संबंधित हैं ।

(ख) कोडक चीन इन्वेस्टमेंट कंपनी तथा कोडक चीन कंपनी लि. के जरिए ईष्टमैन कोडक के मूल जांच अवधि में लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड में शेयर थे ।

(ग) सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी है और उसमें मूल जांच अवधि में निर्यात किए हैं ।

(घ) कोडक चीन कंपनी लिमिटेड ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में यह दर्ज किया है कि इस कंपनी का लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड के वित्त एवं प्रचालनों पर पर्याप्त प्रभाव है और उसने लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड के इस कथन की अनदेखी की है कि कोडक चीन कंपनी लिमिटेड द्वारा लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड के निर्णय लेने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा ।

(ङ) मै. कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशन्स कं. लि. तथा सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) के बीच संबंध की पुष्टि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर होती है ।

vi. वर्तमान मामले के संदर्भ में यदि नियम 2(ख) का स्पष्टीकरण निम्नलिखित कंपनियों पर लागू किया जाता है तो यह निष्कर्ष निकाला जाएगा कि इनमें कोई संबंध नहीं है :

(क) पहली कंपनी वर्तमान मामले में मै. कोडक चीन ग्राफिक्स कम्युनिकेशन्स कंपनी लिमिटेड है जो याचिकाकर्ता है ।

(ख) उक्त अवधि में सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) निर्यात (संबद्ध वस्तु) कर रही थी ।

(ग) ईष्टमैन कोडक-अमरीका वर्तमान याचिकाकर्ता की अंतिम नियंत्रक कंपनी है और कोडक चीन तथा कोडक चीन इन्वेस्टमेंट सहित सभी कंपनियां उसके नियंत्रण में हैं ।

(घ) लकी फिल्म ग्रुप कार्पोरेशन सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) तथा लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड (एल एफ सी) की नियंत्रक कंपनी है ।

- vii. यह निर्विवादित तथ्य है कि (क) उनमें से एक अर्थात् मै. कोडक चीन ग्राफिक कम्युनिकेशन्स कंपनी लिमिटेड तथा सेंकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) का दूसरी कंपनी पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण नहीं है, (ख) दोनों अर्थात् मै. कोडक चीन ग्राफिक कम्युनिकेशन्स कंपनी लिमिटेड तथा सेंकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से तीसरे व्यक्ति द्वारा नियंत्रित नहीं हैं और (ग) दोनों अर्थात् मै. कोडक चीन ग्राफिक कम्युनिकेशन्स कंपनी लिमिटेड तथा सेंकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) मिलकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से तीसरे व्यक्ति पर नियंत्रण नहीं रखती हैं। इसके अलावा, दोनों में से कोई कंपनी विधिक या प्रचालनात्मक रूप से बाद वाली कंपनी पर नियंत्रण रखने या निर्देश देने की स्थिति में नहीं हैं। अतः पक्षकारों की सही जांच किए बिना प्रकटन विवरण में यह माना गया है कि नियम 2(ख) के अनुसार संबंध की पुष्टि होती है। वस्तुतः नियम 2(ख) के अनुसार दोनों कंपनियों के बीच किसी भी रूप में किसी संबंध की पुष्टि नहीं होती है।
- viii. प्राधिकारी ने नियम 22 की गलत व्याख्या करते हुए यह मानने का प्रस्ताव किया है कि आवेदक को पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अर्थ के भीतर न्यू शिपर नहीं माना जा सकता। नियम 22(1) को शब्द "बशर्ते ये निर्यातक या उत्पादक यह प्रदर्शित करें कि वे ऐसे निर्यातक देश जिसके उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लागू है, के किसी निर्यातक या उत्पादक से संबंधित नहीं हैं" के संदर्भ में समीक्षा की जानी है और अलग-अलग मार्जिन के निर्धारण हेतु समीक्षा के स्वरूप की भी जांच की जानी है। अतः समीक्षा की शुरुआत ऐसे नए निर्यातक को मुक्त करने के लिए शुरु की जाती है जो वस्तुतः उत्पाद का पाटन नहीं करते हैं और जिस पर पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू है। जिसका उपयोग ऐसे मामलों में किया जाता है जिनमें निर्यातक/उत्पादक भारतीय बाजार में उत्पाद का पाटन नहीं करता है। इस प्रकार नियम 22 यह प्रदर्शित करते हुए समीक्षा करने की मांग करने वाले न्यू शिपर से संबंधित है, कि ऐसा न्यू शिपर समीक्षा की मांग करने का पात्र है केवल उन्हीं के मामलों की समीक्षा अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु अपेक्षित होती है जिन्होंने नियम 5 के अंतर्गत जांच अवधि के दौरान भारत को उत्पाद का निर्यात नहीं किया है यदि वे "संबंधित" न हों।
- ix. नियम 22 के अंतर्गत समीक्षा की प्रकृति ऐसे निर्यातक/उत्पादक के लिए अलग मार्जिन के निर्धारण हेतु मामला विशिष्ट होती है और पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए कोई पूर्ण जांच नियम 22 के अंतर्गत परिकल्पित नहीं है। नियम 22 के अंतर्गत कार्यवाही तब शुरु की जाती है जब निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह दर्शाया जाए कि ऐसा निर्यातक/उत्पादक निर्यातक देश के ऐसे किसी उत्पादक/निर्यातक से संबंधित नहीं है जिसने नियम 5 के अंतर्गत जांचाधीन वस्तु का उक्त अवधि के दौरान निर्यात किया है। नियम 22 में शामिल अपवाद/प्रतिबंध इस प्रावधान के दुरुपयोग को रोकने के लिए बनाया गया है।
- x. "संबंधित" शब्द का उद्देश्य और प्रयोजन यह देखने के लिए है कि क्या उन कंपनियों के जरिए संभावित संबंध का उल्लंघन विद्यमान है जिनके द्वारा पहले से लागू पाटनरोधी शुल्क का उल्लंघन किया जा सकता है, उदाहरणार्थ "शैल" कंपनी का सृजन कर अथवा उत्पाद के लिए एकमात्र एजेंट की नियुक्ति कर ऐसा किया जा सकता है। न्यू शिपरों की ओर से यह प्रदर्शित

करने की अपेक्षा की जाती है कि वे "संबंधित" नहीं हैं और निर्दिष्ट प्राधिकारी पर तदनुसूची भार इस बात के सत्यापन का होता है कि समीक्षा कराने का प्रयास कर पाटनरोधी शुल्क का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है ।

- xi. प्राधिकारी ने गलत पक्षकारों पर विचार कर संबंध की जांच की है । नियम 22 के अंतर्गत आवेदक कंपनी और पाटनरोधी शुल्क के अधीन निर्यातक/उत्पादक के बीच संबंध की जांच करनी अपेक्षित होती है । वर्तमान जांच के संदर्भ में यह आवेदक कंपनी और सेकेंड फिल्म कंपनी के बीच आरोपित संबंध पर लागू होता है । प्रकटन विवरण में इन दोनों कंपनियों के बीच संबंध की जांच ही नहीं की गई है । इसके बजाए प्रकटन विवरण में याचिकाकर्ता आवेदक और लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड के बीच संबंध की जांच की गई है । प्रकटन विवरण में ऐसा कोई कारण नहीं दिया गया है कि आवेदक कंपनियां किस प्रकार सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) से संबंधित हैं या थीं । वस्तुतः आवेदक मूल जांच अवधि के समय मौजूद ही नहीं था । इन परिस्थितियों में याचिकाकर्ता और पाटनरोधी शुल्क के अधीन निर्यातक/उत्पादक के बीच संबंध का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है । अतः प्रकटन विवरण में गलत पक्षकारों के बीच संबंध की जांच की गई है ।
- xii. प्राधिकारी ने "पर्याप्त प्रभाव" और "नियंत्रण" में अंतर और उसके महत्व को नहीं समझा है तथा लेखा मानकों के अंतर्गत उस परिभाषा की भी अनदेखी की है जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि दोनों कंपनियां संबंधित नहीं हैं । मात्र "पर्याप्त प्रभाव" से पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के तथ्य और उद्देश्य के अनुसार संबंध की पुष्टि नहीं होती है । दोनों संबंधित कंपनियों अर्थात् लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड तथा कोडक चीन कंपनी लिमिटेड ने पूर्णतः अस्पष्ट विवरण दिए हैं । प्रकटन विवरण में दोनों की गलत व्याख्या की गई है । इसके अलावा, प्राधिकारी ने केवल एक कंपनी (कोडक) के विवरण पर भरोसा करने का विकल्प चुना है और दूसरी कंपनी (लकी) के विवरण की अनदेखी की है । दैनिक व्यापार प्रचालनों तथा प्रबंधन में भागीदारी पर स्पष्ट निषेध की पूर्णतः अनदेखी की गई है जो वर्तमान प्रयोजन के लिए सर्वाधिक मूलभूत अपेक्षा है । लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड द्वारा 30 अक्टूबर, 2003 को "शेयरधारिता में परिवर्तन संबंधी रिपोर्ट" के बारे में जारी सार्वजनिक सूचना में निम्नानुसार उल्लेख है ।

"6. निदेशकों की सिफारिश :-

कोडक इन्वेस्टमेंट और/अथवा कोडक चीन के पास कुल मिलाकर लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड के बोर्ड के एक निदेशक की सिफारिश करने का अधिकार होगा । तथापि, वह लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड के दैनिक व्यापार प्रचालन तथा प्रबंधन में भाग नहीं लेगा"

- xiii. कोडक चीन कंपनी लि. ने वर्ष 2004 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट में निम्नानुसार दर्ज किया :

"कोडक और लकी गुप के बीच *** में की गई और *** में वाणिज्य मंत्रालय द्वारा अनुमोदित सहयोग कार्य ढांचा संविदा के अनुसरण में कंपनी ने *** में *** की लागत पर लकी गुप से लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड में *** इक्विटी शेयर अर्जित किए ।

इस कंपनी का लकी फिल्म, कोडक (चीन) कं. लि. तथा कोडक (बुल्सी) कं. लि. के वित्त और प्रचालनों पर अत्यधिक प्रभाव है और इसलिए यह इक्विटी पद्धति का इस्तेमाल करने वाली इन कंपनियों में निवेश करने की हकदार है" ।

xiv. उपर्युक्त से यह देखा जाएगा कि जहां एक कंपनी ने "अत्यधिक प्रभाव" की मौजूदगी का उल्लेख किया है वहीं दूसरी ने "नियंत्रण के अभाव" का जिक्र किया है । इसमें किसी प्रकार का कोई विरोधाभास नहीं है । जहां अत्यधिक प्रभाव का तात्पर्य "भाग लेने के प्राधिकार" से है वहीं नियंत्रण का तात्पर्य "निर्देश देने के प्राधिकार" से है । प्रकटन विवरण में "भाग लेने के प्राधिकार" को "निर्देश देने के प्राधिकार" के बराबर किया गया है । इसके अलावा, प्रकटन विवरण में इस बात की अनदेखी करने का विकल्प चुना है कि निर्देश देने का प्राधिकार पाटनरोधी कानून के प्रयोजनार्थ संगत है । भाग लेने का प्राधिकार उस स्थिति में पूर्णतः असंगत है जब ऐसे प्राधिकारी के पास निर्देश देने का प्राधिकार नहीं है । इसके अलावा प्रकटन विवरण में एक कंपनी (कोडक) के कथन पर भरोसा किया है और दूसरी कंपनी (लकी) के कथन की अनदेखी की है । दैनिक व्यापार का प्रचालन और प्रबंधन में भागीदारी के निषेध की पूर्णतः अनदेखी की गई है जो वर्तमान प्रयोजनार्थ सर्वाधिक आधारभूत अपेक्षा है ।

xv. प्राधिकारी ने पिछले संबंध की जांच कर नियम 22 की गलत व्याख्या निकाली है जबकि केवल वर्तमान संबंध ही प्रासंगिक है । प्रकटन विवरण में कानून की अनदेखी की गई है और मूल जांच अवधि के परिप्रेक्ष्य में संबंध की जांच की गई है । भारतीय नियमावली के नियम 22 और डब्ल्यू टी ओ करार के अनुच्छेद 9.5 में वर्तमान संबंधों पर विचार करने का प्रावधान है । विगत संबंध किसी भी रूप में गैर-परिणामी हैं । नियम 22 तथा अनुच्छेद 9.5 के पाठन से यह स्पष्ट हो जाता है जिसमें इस बात के निर्धारण का प्रावधान है (क) ऐसे उत्पादकों या निर्यातकों द्वारा मूल जांच अवधि में निर्यात नहीं किया जाना चाहिए जिससे पिछली अवधि की शर्त का पता चलता है और (ख) ऐसे आवेदक "शुल्क के अधीन किसी कंपनी" से "संबंधित" नहीं हैं (जिसका तात्पर्य वर्तमान संबंध से है) अतः समूचे संबंध की जांच वर्तमान अवधि अर्थात् निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा चुनी गई जांच अवधि के संदर्भ में करनी होती है । ऐसे संबंध की जांच मूल जांच की जांच अवधि के बारे में नहीं की जा सकती ।

- xvi. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह आरोप लगाया है कि आवेदन दायर करते समय आरोपित संबंध का खुलासा नहीं किया गया था । यह कहना गलत है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को आवेदन दायर करते समय आरोप के संबंध का प्रकटन नहीं किया गया था । आवेदक ऐसे किसी संबंध का खंडन करता है । जब आवेदक यह नहीं मानता है और स्वीकार नहीं करता है कि कोई आरोपित संबंध है तो आवेदक द्वारा इसके प्रकटन का प्रश्न नहीं उठता । प्राधिकारी द्वारा मांग किए जाने पर आवेदक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के साथ सहयोग किया है और सूचना प्रदान की है । जबकि आवेदक यह मानता रहा है कि नियम 22 के अर्थ के भीतर इन कंपनियों के साथ कोई संबंध नहीं था ।
- xvii. पाटनरोधी विधान में अनुचित कीमत निर्धारण पर प्रतिबंध है परंतु उसे अनुचित व्यापार व्यवहारों पर प्रतिबंध को प्रोत्साहित करने के लिए नहीं पढ़ा जा सकता । विधान में भारत सरकार को अनुमति है कि वह ऐसी किसी वस्तु के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाए बशर्ते यह सिद्ध हो जाए कि उत्पाद के निर्यात से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है या क्षति का खतरा उत्पन्न हुआ है या देश में किसी उद्योग की स्थापना में वास्तविक विकृति आई है । पाटनरोधी शुल्क तभी लगाया जा सकता है जब पाटन लगाने की पुष्टि होती हो । ऐसे पाटनरोधी शुल्क को घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए आवश्यक राशि तक सीमित रखना अपेक्षित होता है । इस प्रकार जहां पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य त्रुटि करने वाले ऐसे निर्यातकों को दंडित करना है जिन्होंने पाटन किया है वहीं भारत सरकार ऐसे उत्पादकों/निर्यातकों पर भी पद्धति के अनुसार पाटनरोधी शुल्क लगाती है जिन्होंने संगत अवधि में पाटन नहीं किया है अथवा जो पूर्ववर्ती जांच के समय अस्तित्व में ही नहीं थे । यह पद्धति कारगर निवारण सुनिश्चित करने तथा त्रुटिकर्ता निर्यातकों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के संभावित दुरुपयोग/उल्लंघन को रोकने के लिए प्रचलन में है ।
- xviii. इस बात को समझते हुए कि पाटनरोधी शुल्क उन उत्पादकों पर भी लगाया जाएगा जिन्होंने संगत अवधि के दौरान पाटन नहीं किया है अथवा जो उस समय मौजूद ही नहीं थे, भारत सरकार ने पाटनरोधी डब्ल्यू टी ओ करार के अनुरूप विशिष्ट उपबंध किए हैं ताकि जिन उत्पादकों ने संगत अवधि के दौरान अपने उत्पाद का निर्यात नहीं किया है वे अपने खुद के लिए पृथक पाटनरोधी शुल्क की मांग कर सकें । इसके अलावा, यह स्वीकार करते हुए कि ऐसी अनुमति का त्रुटिकर्ता उत्पादकों द्वारा दुरुपयोग किया जा सकता है, नियमों में यह प्रावधान है कि ऐसा पृथक शुल्क केवल उन्हीं उत्पादकों तक निर्दिष्ट होना चाहिए जो यह सिद्ध करते हैं कि वे ऐसे उत्पादक/निर्यातक से संबंधित नहीं हैं जिन्होंने पूर्ववर्ती संगत अवधि के दौरान उत्पाद का पूर्व में निर्यात किया था (और इसलिए पूर्ववर्ती संगत अवधि के दौरान ऐसे पूर्ववर्ती निर्यातों के कारण जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू हैं) । निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए कानून में निहित अपवाद के प्रयोजन और उद्देश्य पर विचार करना अपेक्षित है । माननीय न्यायाधिकरण ने कानून के अंतर्गत अपवाद के प्रयोजन और उद्देश्य को विस्तार से निर्धारित किया है और निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस संबंध में पर्याप्त दिशानिर्देश दिए हैं ।

- xix. निर्दिष्ट प्राधिकारी अपनी खुद की पद्धति पर विचार कर सकते हैं जिसके अंतर्गत केवल उन कंपनियों के संबंध में विशिष्ट पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई है जिन्होंने संगत अवधि में उत्पाद का निर्यात किया है और अलग-अलग शुल्क रखने वाले ऐसे उत्पादक की संबंधित कंपनियों पर इसे लागू नहीं किया गया है । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निकाली गई वर्तमान व्याख्या से ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिसमें विदेश में एक से अधिक विनिर्माण कंपनी रखने वाले कंपनी ग्रुप पर शुल्क लगाया जाएगा जिसने संगत अवधि के दौरान उत्पाद का निर्यात किया था और उस समूह की अन्य कंपनियां केवल इस वजह से भारतीय बाजार में अपने उत्पाद का निर्यात करने से हमेशा वंचित हो जाएंगी कि संगत अवधि के दौरान उसका निर्यात करने वाली कंपनी के साथ "संबंध" है ।
- xx. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस बात की भी अनदेखी की है कि यदि किसी शब्द को नियमों में किसी खास प्रयोजन के लिए परिभाषित किया गया है तो वह न केवल संगत है अपितु बाध्यकारी भी है या कम से कम उसी नियमावली में अन्य स्थानों पर उल्लिखित उसी शब्द की व्याख्या करने में मार्गदर्शन प्रदान करता है । इस प्रकार नियम 22 और नियम 2 (ख) दोनों में "संबंधित" शब्द का उल्लेख है और इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को नियम 22 के प्रयोजनार्थ नियम 2 (ख) में निर्दिष्ट "संबंधित" की परिभाषा पर भरोसा करना चाहिए या उल्लेख करना चाहिए या उसकी भावना का आदर करना चाहिए । इस बात को मानते हुए परंतु उसे स्वीकार न करते हुए कि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस प्रकार की व्याख्या करने में न्यायोचित हैं तथापि, आवेदकों का यह अनुरोध है कि यदि नियम 2 (ख) के अंतर्गत संबंधित पक्षकारों की परिभाषा को लागू नहीं किया जा सकता तो लेखा मानकों या किसी अन्य संविधि में उल्लिखित संबंधित पक्षकार की परिभाषा को "संबंधित" के अर्थ को तय करने में प्रासंगिक तथा उपयोगी माना जाना चाहिए और यदि इसे अप्रयोज्य माना जाता है तो इस उपबंध के प्रयोजन और उद्देश्य को इस शब्द की व्याख्या करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए । निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह नहीं मानना चाहिए कि वर्तमान प्रयोजन के लिए "संबंधित" शब्द को परिभाषित करना आवश्यक नहीं है जिससे न केवल वर्तमान जांच अपितु सभी संभावित भावी जांचें भी अधर में पड़ जाती हैं । निर्दिष्ट प्राधिकारी को वर्तमान मामले पर निर्णय लेते समय भारतीय उपभोक्ताओं तथा उत्पादकों को भविष्य में संगत विधिक प्रावधानों का उपयोग करने के बारे में दिशानिर्देश देना अपेक्षित है । चूंकि नियम 22 के अंतर्गत प्रदत्त अपवाद का उद्देश्य उन त्रुटिकर्ता विदेशी उत्पादकों द्वारा इस उपबंध के दुरुपयोग को रोकना है जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है । इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को वर्तमान मामले में पक्षकारों के बीच संबंध की प्रकृति, ऐसे संबंध का साक्ष्य, ऐसे पक्षकारों के व्यापार, ऐसी कंपनियों की पात्रता और पक्षकारों को प्रदत्त व्यापार अधिकारों की जांच करनी चाहिए ।
- xxi. निर्दिष्ट प्राधिकारी यह भी नोट कर सकते हैं कि संगत वर्तमान अवधि के दौरान आरोपित संबंध मौजूद नहीं हैं जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचार का विषय है । इसके अलावा पूर्ववर्ती जांच अवधि के दौरान भी उस उत्पादक और आवेदक कंपनियों के बीच संबंध मौजूद नहीं था जिसने उक्त अवधि के दौरान उत्पाद का निर्यात किया था ।

- xxii. याचिकाकर्ता ने विचाराधीन उत्पाद का बड़ी मात्रा में निर्यात किया है और कानून की वर्तमान गलत व्याख्या से आवेदक कंपनी समूह को पर्याप्त अपूरणीय वित्तीय घाटा होगा। इसके अलावा, यदि आवेदक कंपनियों को अलग-अलग शुल्क प्रदान नहीं किया जाता है तो उन पर कोई दोष न होने पर अवशिष्ट पाटनरोधी शुल्क के भुगतान का दायित्व आएगा जबकि ग्रुप ने मूल जांच तथा वर्तमान जांच के समय निर्दिष्ट प्राधिकारी को सहयोग किया है।
- xxiii. नियम 22 के अंतर्गत प्राधिकारी के लिए दो मापदंडों पर विचार करना अपेक्षित है :-

क. आवेदक को मूल जांच अवधि के दौरान भारत को उत्पाद का निर्यात नहीं करना चाहिए—यह अपेक्षा मूल जांच अवधि के संबंध में है;

ख. आवेदक को पाटनरोधी शुल्क के अधीन निर्यातकों या उत्पादकों से संबंधित नहीं होना चाहिए — इस संबंध की जांच निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अब चुनी गई जांच अवधि के संदर्भ में की जानी चाहिए। नियम 22 में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका तात्पर्य यह निकाला जा सके कि मूल जांच अवधि के समय यह संबंध मौजूद होना चाहिए। संबंध तक न्यू शिपर जांच अवधि के समय विचार करना अपेक्षित है। निम्नलिखित स्थितियों पर विचार करें :

- इस स्थिति पर विचार करें जहां कोई संयुक्त उद्यम कंपनी (सी) दो बहुराष्ट्रीय कंपनियों (अर्थात् ए और बी) द्वारा स्थापित की जाती है। यह संयुक्त उद्यम कंपनी उत्पादों का विनिर्माण करती है और भारत को निर्यात करती है तथा ऐसे पाटन के परिणामस्वरूप उस पर पाटनरोधी शुल्क लागू है। इस बात पर भी विचार करें कि कुछ समय बाद दोनों बहुराष्ट्रीय कंपनियां इस कंपनी को बेचने का निर्णय लेती हैं। दो स्थितियां हो सकती हैं — जहां कंपनी ए समग्र निवेश कंपनी (बी) को बेच देती है अथवा जहां उसकी बिक्री अन्य कंपनी (डी) को की जाती है, दोनों ही स्थिति में कंपनी (ए) जो विनिर्माण कंपनी नहीं थी, अब अपनी खुद की विनिर्माण सुविधा अर्थात् कंपनी (ई) स्थापित करती है। यह कंपनी (ई) अब अपने खुद के पाटन मार्जिन के लिए प्राधिकारी के समक्ष आवेदन दायर करती है। यह नहीं कहा जा सकता कि कंपनी (ई) इस वजह से अपने खुद के पाटन मार्जिन की पात्र नहीं है कि संयुक्त उद्यम कंपनी सी पर पाटनरोधी शुल्क लागू है जब तक कि प्राधिकारी यह निष्कर्ष न निकालें कि दोनों कंपनियों द्वारा निवेश की बिक्री का समग्र उद्देश्य भारत में लगाए गए शुल्क का अपवंचन करना है।
- इस स्थिति पर विचार करें जहां कोई उत्पादक कंपनी (ए) अपने उत्पादों का निर्यात (क) संबद्ध व्यापार कंपनी बी तथा (ख) संबद्ध व्यापार कंपनी सी के जरिए करती है। किए गए पाटन के कारण उत्पादक कंपनी ए पर ऐसे पाटन के परिणामस्वरूप पाटनरोधी शुल्क लागू है। पाटनरोधी शुल्क को इस प्रकार लगाए जाने के परिणामस्वरूप कंपनी सी अब एक अन्य कंपनी, कंपनी-डी स्थापित करती है और नव स्थापित कंपनी-डी के जरिए उत्पाद

का निर्यात करना चाहती है । अथवा एक ऐसी स्थिति हो सकती है जिसमें एक अन्य उत्पादक कंपनी समूह में अर्थात् कंपनी ई के रूप में स्थापित है और एक नई व्यापार कंपनी एफ स्थापित कर पाटनरोधी शुल्क की उच्च मात्रा का अपवंचन करने का निर्णय लिया जाता है । यह नहीं कहा जा सकता कि ऐसी अन्य उत्पादक कंपनी — ई अपने खुद के पाटन मार्जिन के लिए पात्र है ।

- xxiv. दस्तावेज के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि संबंध को मानते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने ऐसा कोई कारण नहीं दिया है जिसके आधार पर उन्होंने यह निर्धारित किया है कि ये दोनों कंपनियां वास्तव में संबंधित कंपनियां हैं । निर्दिष्ट प्राधिकारी उचित कारण बताए बिना किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते । यही नहीं बल्कि प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत में यह अपेक्षित है कि प्राधिकारी यथोचित आदेश दें, नियम 17 में यह स्पष्ट किया गया है कि प्राधिकारी द्वारा जारी अंतिम जांच परिणाम में निष्कर्ष के पर्याप्त कारण दिए जाने चाहिए । अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी को दोनों कंपनी के बीच संबंध मानने के लिए पर्याप्त कारण देने चाहिए ।
- xxv. प्राधिकारी को कानून में किसी अन्य स्पष्ट परिभाषा के अभाव में सीमाशुल्क टैरिफ (पाटनरोधी) निष्ठावली 1995 के नियम 2(ख) में दी गई संबंधित पक्षकार की परिभाषा लागू करनी चाहिए । “संबंधित” शब्द को नियम 22 में परिभाषित नहीं किया गया है । इसके अलावा, नियम 2 (ख) को छोड़कर कानून में कहीं भी संबंधित शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है । यह एक सुस्थापित कानूनी स्थिति है कि यदि एक शब्द का उपयोग कानून में कई स्थानों में किया गया है तो उस शब्द को वही अर्थ प्रदान किया जाना चाहिए जैसा कि नियमों में विशेष रूप से दिया गया है । चूंकि नियम 2 (ख) के संदर्भ में संबंधित शब्द को परिभाषित किया गया है, इसलिए वर्तमान प्रयोजन के लिए भी उसी परिभाषा का उपयोग किया जाना चाहिए ।
- xxvi. नियम 2 (ख) के अंतर्गत संबंधित की परिभाषा न केवल संगत है अपितु, सीधे प्रासंगिक भी है । इस संबंध में यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि घरेलू उत्पादक और आयातक/निर्यातक के बीच संबंध के मुद्दे के बारे में नियम 2 (ख) के अंतर्गत परिभाषा दी गई है । ऐसी संबंधित कंपनियों के संभावित अपवर्जन के उद्देश्य को देखते हुए यह माना जाता है कि नियम 2 (ख) में उन कंपनियों को अलग रखने का प्रावधान है जिनका किसी घरेलू उत्पादक के साथ ऐसा “संबंध” है क्योंकि इससे घरेलू उद्योग के क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा । उदाहरणार्थ कोई कंपनी किसी विदेशी उत्पादक से संबंधित हो सकती है और इसलिए वह किसी याचिका का समर्थन करना नहीं चाहती है । अतः नियमों में संशोधन किया गया है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी को ऐसी कंपनियों को बाहर रखने का प्राधिकार दिया जा सके जिससे अन्य मौलिक घरेलू उत्पादक आवेदन दायर करने से वंचित न हो सकें । ऐसी ही स्थिति संबंधित आयातक के बारे में है । इस प्रकार नियम 2 (ख) के अंतर्गत संबंध को परिभाषित करने का उद्देश्य निर्दिष्ट प्राधिकारी को ऐसी कंपनियों को अलग रखने के लिए प्राधिकार देना है जिनके संबंध से कानून के उद्देश्य में बाधा पहुंच सकती है । इसी प्रकार नियम 22 के अंतर्गत प्रदत्त अपवर्जन का उद्देश्य निर्दिष्ट प्राधिकारी को ऐसी कंपनियां अलग रखने के लिए प्राधिकृत करना है जिनके

संबंध से कानून के उद्देश्य में बाधा पहुंच सकती है । ऐसा मामला होने के कारण नियम 2 (ख) के अंतर्गत परिभाषा प्रत्यक्षतः प्रासंगिक है और वस्तुतः नियम 22 के उपबंधों के लिए अत्यधिक संगत है ।

xxvii. लेखा मानक 18 (ए एस 18) वर्तमान मामले में कई कारणों से प्रत्यक्षतः प्रासंगिक है । प्रथमतः चूंकि समूचा मुद्दा पक्षकारों द्वारा वार्षिक रिपोर्ट में या स्टॉक एक्सचेंज में प्रकटन के कारण उठाया गया है इसलिए लेखा मानकों के अंतर्गत परिभाषा अत्यंत प्रासंगिक है । द्वितीयतः चूंकि यह मुद्दा कंपनियों के बीच संबंध से जुड़ा है इसलिए लेखा मानकों के अंतर्गत परिभाषा अत्यधिक प्रासंगिक है । तृतीयतः उक्त लेखा मानक में संबंधित पक्षकारों और अत्यधिक प्रभाव रखने वाले पक्षकारों को परिभाषित किया गया है । चतुर्थतः या तो प्राधिकारी को स्वयं पाटन कानून के अंतर्गत संबंधित पक्षकार की परिभाषा पर विचार करना चाहिए या फिर यह मानना चाहिए कि उक्त परिभाषा संगत नहीं है । लेखा मानक 18 के अंतर्गत संबंधित पक्षकार की परिभाषा के अनुसार पक्षकारों को उस स्थिति में "संबंधित पक्षकार" माना जाता है जब रिपोर्ट अवधि के दौरान किसी भी समय एक पक्षकार के पास दूसरे पक्षकार पर नियंत्रण रखने की क्षमता हो अथवा वह वित्तीय और/अथवा प्रचालन निर्णय लेने में दूसरे पक्षकार पर अत्यधिक प्रभाव का प्रयोग करता हो । इसके अलावा, लेखा मानक 18 के अनुसार "अत्यधिक प्रभाव" का तात्पर्य किसी उद्यम के वित्तीय और/अथवा प्रचालन नीति में भागीदारी से है न कि उन नीतियों के नियंत्रण से ।

xxviii. उपर्युक्त से यह स्पष्ट होता है कि उसी लेखा मानकों में परिभाषित "संबंधित" और "अत्यधिक प्रभाव" शब्द अलग-अलग शब्द हैं और इसलिए दोनों का तात्पर्य एक नहीं है । इसके अलावा, मात्र यह तथ्य कि एक कंपनी का दूसरी कंपनी पर अत्यधिक प्रभाव है, यह अर्थ नहीं देता है कि दोनों संबंधित हैं ।

xxix. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस आशय का कोई कारण नहीं दिया है कि लेखा मानकों में दी गई परिभाषाएं क्यों प्रासंगिक या प्रयोज्य नहीं हैं । यह इस वजह से अधिक संगत और महत्वपूर्ण है कि (i) प्राधिकारी के लिए जो संगत है वह नियंत्रण है (और न कि अत्यधिक प्रभाव), (ii) प्राधिकारी ने इस बात पर विचार किया है कि "नियंत्रण" और "अत्यधिक प्रभाव" का अर्थ एक समान है, (iii) लेखा मानकों में "नियंत्रण" और "अत्यधिक प्रभाव" के बीच स्पष्ट भेद किया गया है (iv) प्राधिकारी ने वार्षिक रिपोर्टों में विवरणों के आधार पर दोनों कंपनियों को संबंधित माना है और इसलिए लेखा मानक (जिनके अंतर्गत प्रकटन किया गया है) प्रत्यक्षा रूप से संगत बन जाते हैं ।

xxx. यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी यह मानते हैं कि न तो नियम 2(ख) के अंतर्गत परिभाषा और न ही ए एस-18 के अंतर्गत दी गई परिभाषा मार्गदर्शी है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए "संबंधित" शब्द को परिभाषित करना और उसके अर्थ पर विचार करना अपेक्षित है । इस संबंध में

निर्दिष्ट प्राधिकारी का ध्यान विट्रीफाइट टाइलों के मामले में माननीय सेस्टेट के आदेशों की ओर आकर्षित करने का अनुरोध है ।

- xxxi. प्राधिकारी ने यह बताया है कि उपर्युक्त निर्णय इस वजह से प्रयोक्त्य/संगत नहीं है कि वह घरेलू उद्योग के क्षेत्र के संदर्भ में है । तथापि, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि घरेलू उद्योग के क्षेत्र के प्रयोजनार्थ और न्यू शिपर समीक्षा के प्रयोजनार्थ प्रदत्त अपवाद के उद्देश्य के कारण इसका सीधा अर्थ यह निकलता है कि दोनों अपवादों के समान या समनुरूप उद्देश्य हैं । जहां नियम 2 (ख) के अंतर्गत अपवाद में यह प्रावधान है कि (क) घरेलू उद्योग पाटित आयातों के खिलाफ संरक्षण की मांग कर सकता है (ख) ऐसे घरेलू उत्पादक संरक्षण प्राप्त करने से अन्य को वंचित नहीं कर सकते हैं जो विदेशी उत्पादकों से संबंधित ह, (ग) घरेलू उत्पादक द्वारा स्वयं संभावित आयात किए जाने के कारण क्षति निर्धारण में विकृति नहीं आती है । इसी प्रकार नियम 22 के अंतर्गत अपवाद में यह प्रावधान है कि कोई विदेशी उत्पादक उस स्थिति में अपने खुद के लिए पाटन मार्जिन की मांग कर सकता है जब उसने मूल जांच के समय असहयोग किया है अथवा अपनी संबंधित कंपनी का उपयोग कर पृथक पाटन मार्जिन प्राप्त करने की पद्धति में बाधा डाली हो ।
- xxxii. निर्दिष्ट प्राधिकारी यह समझने में विफल रहे हैं कि आवेदक कंपनियां अधर में रह जाएंगी ! जहां तक इनका संबंध है कि ये (i) मूल जांच के समय पृथक शुल्क की मांग नहीं कर सकती हैं, (ii) न्यू शिपर समीक्षा के जरिए अब पृथक शुल्क की मांग नहीं कर सकती हैं, (iii) ये कंपनियां नियम 23 के जरिए पृथक शुल्क की मांग नहीं कर सकती हैं । इसी उत्पादक का यह मूलभूत अधिकार होता है कि वह अपने खुद के पाटन मार्जिन के आधार पर पृथक शुल्क की मांग करे ।
- xxxiii. जो कंपनी मूल जांच के समय मौजूद नहीं है, वह ऐसे पृथक शुल्क की मांग नहीं कर सकती है । चूंकि कंपनी ने मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के कारण पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भारत को उत्पाद का निर्यात नहीं किया है । चूंकि प्राधिकारी यह समझते हैं कि नियम 23 में पूर्ण मध्यावधि समीक्षा का प्रावधान है इसलिए कंपनियां नियम 23 के अंतर्गत मध्यावधि समीक्षा की मांग नहीं कर सकती हैं । अतः यदि यह माना जाता है कि ऐसी कंपनियां नियम 22 के अंतर्गत न्यू शिपर समीक्षा की पात्र नहीं हैं तो इस निर्धारण का तात्पर्य नहीं है कि ऐसी कंपनियां अपने खुद के लिए अलग पाटन मार्जिन की पात्र ही नहीं हैं । भावी निर्णायक समीक्षा के समय भी चूंकि निर्णायक समीक्षा उस अवधि में किए गए वास्तविक निर्यातों पर ही केन्द्रित होती है, इसलिए ऐसी कंपनियां निर्णायक समीक्षा के जरिए भी अपना खुद का पाटन शुल्क प्राप्त नहीं कर सकेंगी । दूसरे शब्दों में प्राधिकारी के निर्धारण का यह तात्पर्य निकलेगा कि आवेदक कंपनियां जैसी कंपनियां अपने खुद का अलग शुल्क नहीं हासिल कर सकेंगी और उन्हें किसी दोष के बिना अवशिष्ट शुल्क का अनिवार्यतः भुगतान करना होगा । यह डब्ल्यू टी ओ करार के स्पष्ट अधिदेश के बाहर है जिसमें डब्ल्यू टी ओ सदस्य देशों से यह अपेक्षा की

गई है कि वे प्राधिकारी के साथ सहयोग करने के इच्छुक उत्पादकों/निर्यातकों के लिए अलग शुल्क की व्यवस्था करें ।

xxxiv. प्राधिकारी ने इस बात पर गलत ढंग से विचार किया है कि सेस्टेट के अभिमत केवल जांच शुरूआत के प्रयोजनार्थ प्रासंगिक हैं । सेस्टेट के अभिमत निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित अंतिम जांच परिणाम के खिलाफ दायर अपील में दिए गए हैं और ये नियम 22 के अंतर्गत उपलब्ध अपवाद के उद्देश्य और प्रयोजन के संबंध में हैं । सेस्टेट के आदेश में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका तात्पर्य यह निकाला जा सके कि उक्त अभिमत जांच की शुरूआत के संबंध में दिए गए हैं ।

xxxv. वर्तमान मामले में कोडक की शेयरधारिता सर्कुलर वीविंग मशीनों के मामले में शेयरधारिता से काफी कम है जिसमें प्राधिकारी ने यह माना है कि विधिक नियंत्रण प्रदान करने के लिए शेयरधारित महत्वपूर्ण नहीं है । प्राधिकारी ने यह बताया है कि उपर्युक्त निर्णय इस वजह से प्रयोज्य/प्रासंगिक नहीं है कि वह घरेलू उद्योग के क्षेत्र के संदर्भ में है तथापि, घरेलू उद्योग के क्षेत्र और न्यू शिपर समीक्षा के प्रयोजन के लिए प्रदत्त अपवाद को ध्यान में रखते हुए इसका सीधा तात्पर्य यह है कि दोनों अपवाद समान या समनुरूप उद्देश्य के लिए किए गए हैं । सर्कुलर वीविंग मशीनों से संबंधित जांच में प्राधिकारी ने संबंध के बारे में निम्नानुसार निर्णय लिया है :

(2) प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादक और निर्यातक के संबंध का प्रमुख घटक "नियंत्रण" है चाहे वह विधिक हो या प्रचालनात्मक । प्राधिकारी ने यह पाया है कि स्टारलिंगर, चीन, स्टारलिंगर, आस्ट्रेलिया की 100 प्रतिशत सहायक कंपनी है और इसलिए दोनों संबंधित कंपनियां हैं । इसके अलावा, यह साक्ष्य दिया गया है कि स्टारलिंगर, आस्ट्रेलिया का आवेदक कंपनी अर्थात् लोहिया स्टारलिंगर लिमिटेड में 34.67 प्रतिशत शेयर हैं । परंतु मात्र शेयरधारिता नियंत्रण रखने का पर्याय नहीं है और इसलिए स्टारलिंगर, आस्ट्रेलिया और/अथवा स्टारलिंगर, चीन लोहिया स्टारलिंगर लिमिटेड (एलएसएल) से पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत संबंधित नहीं होती हैं । अधिकांश शेयरधारिता अर्थात् 50 प्रतिशत से अधिक की शेयरधारिता से ही विधिक नियंत्रण हो जाता है । इसके अलावा, प्राधिकारी ने यह पाया है कि स्टारलिंगर, आस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई निदेशक वर्ष 2002 से आवेदक कंपनी के बोर्ड में नियुक्त नहीं किया गया है । दोनों पक्षकारों ने रिकॉर्ड में यह दर्शाया है कि स्टारलिंगर, आस्ट्रेलिया ने एल एस एल के बोर्ड में अपना नामिति नियुक्त करने की मांग करते हुए कंपनी लॉ बोर्ड के समक्ष एक याचिका दायर की है । इन सबसे यह सिद्ध होता है कि स्टारलिंगर, आस्ट्रेलिया का एल एस एल पर भी कोई प्रचालनात्मक नियंत्रण नहीं है । इसके अलावा, यदि दोनों पक्षकार संबंधित पक्षकार हैं तो घरेलू उत्पादक पर अपात्र होने के रूप में विचार करने के लिए संबंध का एकमात्र तथ्य अपर्याप्त है । ऐसे संबद्ध घरेलू उत्पादक के अपवर्जन को न्यायोचित ठहराने के लिए पर्याप्त आधार होने चाहिए । ऐसा साक्ष्य होना चाहिए कि संबंधित घरेलू उत्पादक ने संबंध के कारण अलग कार्य किया है अथवा उसने पाटन के व्यवहार में भाग लिया है और उसने ऐसे कदम उठाए हैं जिनके कारण स्वतः स्फूर्त क्षति हुई है । वर्तमान मामले में ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है कि दोनों

पक्षकारों के बीच संबंध से याचिकाकर्ता ने किसी असंबद्ध उत्पादक से अलग व्यवहार किया है । अतः स्टारलिंगर, आस्ट्रिया और/अथवा स्टारलिंगर, चीन द्वारा एल एस एल के ऊपर विधिक या प्रचालनात्मक नियंत्रण एवं नियम 2 (ख) में निहित उपबंध के मददेनजर एल एस एल को अपात्र घरेलू उत्पादक मानने के पर्याप्त आधार के अभाव में प्राधिकारी यह मानते हैं कि आवेदक पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग माने जाने का पात्र है ।

प्रथम एवं द्वितीय मौखिक सुनवाई में तथा प्रथम एवं द्वितीय प्रकटन विवरणों के बाद घरेलू उद्योग के विचार/अनुरोध

19. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- i. कानून में निहित मानक निर्यातक से "संबंध" का है न कि "नियंत्रण" का । ईष्टमैन कोडक तथा लकी ग्रुप के बीच 1.2 बिलियन अम.डा. के निवेश के साथ 20 प्रतिशत हिस्सेदारी प्राप्त करने के लिए एक करार पर हस्ताक्षर किए गए थे । द्वितीयतः निदेशक मंडल में एक ऐसा निदेशक था जिसके द्वारा संबंध वस्तु के उत्पादन, आपूर्ति, वितरण के बारे में उक्त संयुक्त उद्यम के प्रचालनों पर नियंत्रण रखना चाहिए था । इन उपलब्ध तथ्यों के साथ इस बात पर विश्वास करना वाणिज्यिक रूप से व्यवहार्य है कि निदेशक का इस विषय पर विशेष रूप से संयुक्त उद्यम के प्रचालन पर कोई नियंत्रण नहीं था ।
- ii. पक्षकारों के लिए यह प्रदर्शित करना या दर्शाना लाजिमी है कि वे ऐसे निर्यातकों या उत्पादकों से पूर्व में संबंधित नहीं हैं जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है और यह प्राधिकारी का कर्तव्य है कि वह इस बारे में स्वयं को संतुष्ट करें । एच एंड आर जोनसन लि. बनाम डी ए का हवाला दिया जाता है ।
- iii. नियम 22 के पीछे वैधानिक मंशा को भारत सरकार ने डब्ल्यू टी ओ में पूर्णतः स्पष्ट कर दिया है और जिसकी व्याख्या न्यायाधिकरण ने की है । निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह सुनिश्चित करने के सभी प्रयास करने चाहिए कि न्यू शिपर आवेदन के माध्यम से पाटनरोधी शुल्क का कोई अपवंचन नहीं होता है । अतः यदि न्यू शिपर समीक्षा जारी रखने की अनुमति दी जाती है तो के जी सी सी एल कोई पाटनरोधी शुल्क का भुगतान किए बिना उक्त उत्पाद का निर्यात कर सकेगी जो उसकी संबंधित कंपनी है और जिसे अपवंचन की वजह से शुल्क का भुगतान करना होगा ।
- iv. (क) ईष्टमैन कोडक ने चीन लकी फिल्म कंपनी (एल एफ सी) के साथ 20 वर्षीय करार पर हस्ताक्षर किए हैं और नवंबर, 2003 से नवंबर, 2007 तक एल एफ सी में उसके 20 प्रतिशत शेयर हैं । एल एफ सी की पूर्ण स्वामित्व वाली 3 सहायक कंपनियां हैं अर्थात् सेकेंड फिल्म

कंपनी (एस एफसी) लकी रिसर्च इंस्टीट्यूट (एल आर आई) और लकी शंघाई पेपर मिल (एल पी एस एम) । अतः अप्रैल, 2005—मार्च, 2006 के दौरान एस एफ सी तथा ईष्टमैन कोडक संबंधित कंपनियां थीं जो मूल जांच अवधि थी । एस एफ सी ने मूल जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात किया था ।

(ख) कोडक (चीन) कंपनी लि. (के सी एल) तथा कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट लि. (के आई सी एल) ईष्टमैन कोडक की प्रमुख सहायक कंपनियां हैं । इन दोनों का दृष्यमान न्यूशिपर के जी सी सी एल में 100 प्रतिशत शेयरधारिता है । अतः ईष्टमैन कोडक और के जी सी सी एल स्पष्ट तौर पर संबंधित कंपनियां हैं ।

(ग) अतः के जी सी सी एल न्यू शिपर समीक्षा दायर करने की योग्य नहीं है क्योंकि वह निर्यातक/उत्पादक अर्थात् एस एफ सी से संबंधित है जिसने वस्तुतः मूल जांच अवधि के दौरान चीन से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है ।

- v. शुरू की गई जांच पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 9.5 तथा पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के प्रतिकूल है ।
- vi. कोडक चीन इन्वेस्टमैन कंपनी लि., कोडक सिंगापुर प्रा. लि. तथा कोडक इंडिया प्रा. लि. को न्यू शिपर समीक्षा दायर करने वाली कंपनी के रूप में ही दर्ज नहीं किया गया था और उनकी इस दृष्टि से जांच नहीं की जा सकती कि उन्होंने यह प्रदर्शित नहीं किया है कि वे निर्यातक देश के किसी निर्यातक या उत्पादक से संबंधित नहीं हैं ।
- vii. कोडक सिंगापुर प्रा.लि. एक साझा मूल कंपनी के जरिए कोडक पॉलीकोम ग्राफिक्स सिंगापुर प्रा. लि. से संबंधित है और इस प्रकार वह प्रथम दृष्टया कोई न्यू शिपर समीक्षा की मांग करने के अयोग्य है ।
- viii. जहां तक कोडक की भारतीय शाखा का संबंध है, वह वही है जिसकी मूल रूप से जांच की गई थी और जिसकी पुनः जांच नहीं की जा सकती । साझा शेयर धारक कंपनी सिंगापुर तथा भारतीय आयातक दोनों कंपनियों पर नियंत्रण रखती है ।
- ix. कोडक पॉलीकोम ग्राफिक सिंगापुर, लि. की मूल कंपनी अर्थात् ईष्टमैन कोडक के साथ संबंध को निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष दृश्यमान न्यूशिपर द्वारा दायर उत्तर में स्वीकार किया गया है।

- x. कोडक (चीन) ग्राफिक कम्युनिकेशन कंपनी लि. (के जी सी सी एल) निर्यातक देश (सिंगापुर) के एक निर्यातक से संबंधित है इसलिए वह न्यू शिपर के रूप में आवेदन करने के लिए नियम 22 में निर्धारित शर्त को पूरा नहीं करती है ।
- xi. सर्कुलर वीविंग मशीनों पर भरोसा करना पूर्णतः निराधार है क्योंकि "घरेलू उद्योग" की परिभाषा प्रश्नाधीन थी । नियम 2 (ख) के स्पष्टीकरण तथा पाद टिप्पणी में स्पष्टतः यह प्रावधान है कि घरेलू उद्योग के संबंधित पक्षकारों को परिभाषित करने के लिए "संबंधित" की परिभाषा सीमित है ।
- xii. दृश्यमान न्यू शिपर में निर्दिष्ट प्राधिकारी को धोखा देने और समीक्षा जारी रखने के लिए व्यापक हेरफेर किया है ।
- xiii. के जी सी सी एल ने एल्यूमिनियम की कीमत तैयार वस्तु की लागत के 70-80 प्रतिशत हो जाने के बाद भी पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के पश्चात संदर्भ कीमत पर या उससे अधिक कीमत पर भारत को निर्यात किया है । वर्तमान जांच अवधि में मात्रा में कमी की गई तथा जांच अवधि के बाद मात्रा में लगभग 7 गुना वृद्धि की गई ।
- xiv. के जी सी सी एल ने एम ई टी प्रश्नावली में घाटे पर संबद्ध वस्तु की बिक्री को स्वीकार किया है ।
- xv. न्यू शिपर ने यह अनुरोध किया है कि ईष्टमैन कोडक द्वारा किए गए निवेश मात्र निवेश हैं और ईष्टमैन कोडक को कोई नियंत्रणकारी हित नहीं दिया गया है । तथापि, निर्दिष्ट प्राधिकारी की अभिरक्षा में उपलब्ध दस्तावेजों से निर्विवाद तौर पर यह पता चलता है कि ईष्टमैन कोडक का एल एफ सी के वित्त और प्रचालनों पर पर्याप्त प्रभाव है । तथापि, यह एक ज्ञात तथ्य है कि ईष्टमैन कोडक के निदेशकों में से कोई भी निदेशक (जो न्यू शिपर की मूल कंपनी है) लकी ग्रुप के निदेशक मंडल का भाग नहीं था । अतः इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि कोडक का कंपनी के निर्णयकारी नीतियों की सीमा तक नियंत्रणकारी दावा था ।
- xvi. कंपनियों के बीच संबंध के कारण इस बात का स्पष्ट निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि (i) ईष्टमैन कोडक का मूल जांच अवधि के दौरान एस एफ सी के साथ संबंध था, (ii) एस एफ सी ने मूल जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात किया था, (iii) ईष्टमैन कोडक तथा न्यू शिपर भी संबंधित कंपनियां हैं और न्यू शिपर ने 2005 में प्रचालन स्थापित किए थे तथा (iv) न्यू शिपर ने उक्त आवेदन और निर्यातक प्रश्नावली तथा बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के अपने उत्तर में इन तथ्यों को छिपाया था ।
- xvii. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह सही निष्कर्ष निकाला है कि वर्तमान मामले में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में यथापरिभाषित "संबंध" को इस मामले में निर्धारित करना अपेक्षित नहीं है ।

xviii. इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि पाटनरोधी कानून में उल्लिखित मानक निर्यातक के साथ "संबंध" का है न कि "नियंत्रण" का ।

xix. जहां तक "अत्यधिक प्रभाव" के बारे में न्यू शिपर के तर्क का संबंध है, इसका तात्पर्य "भाग लेने के प्राधिकार" से है न कि "निर्देश देने के प्राधिकार" से । अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह सही निर्णय लिया है कि कोडक चीन कंपनी लिमिटेड का "अत्यधिक प्रभाव" न केवल एल एफ सी के वित्त पर है अपितु वर्तमान मामले में भी है जिसका तात्पर्य यह है कि प्राधिकारी एल एफ सी के वाणिज्यिक लक्ष्यों की पैरवी करने का निर्देश दे । अतः पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 में यथापेक्षित "संबंध" के तथ्य की स्पष्ट पुष्टि होती है ।

xx. जहां तक न्यूशिपर के इस दावे का संबंध है कि वर्ष 2008 में पूर्ण हुई विनिवेश प्रक्रिया के कारण वर्ष 2008 के बाद कोई संबंध नहीं रहा है, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह सही नोट किया है कि मूल जांच अवधि अर्थात् 2005-06 के दौरान संबंध की स्पष्ट पुष्टि हुई थी जो पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत न्यू शिपर समीक्षा के प्रयोजनार्थ अपेक्षित है ।

xxi. यदि न्यू शिपर को पाटनरोधी शुल्क के बिना निर्यात की अनुमति दी जाती है तो वह घरेलू उद्योग के प्रबल खतरा बना रहता है ।

xxii. न्यू शिपर के आवेदन को रद्द किया जाना चाहिए तथा उच्चतम शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जानी चाहिए ।

निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच

20. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध जांच प्रथमदृष्टया यह स्वीकार करने के बाद शुरू की गई थी कि आवेदक मै. कोडक (चीन) ग्राफिक कम्युनिकेशन कंपनी लिमिटेड, चीन जन.गण. पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के उपबंध की निम्नलिखित शर्तों को पूरा करती है :-

क. कि आवेदक ने मूल जांच की जांच अवधि में संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया था ; और

ख. कि आवेदक चीन में संबद्ध वस्तु के ऐसे किसी निर्यातक/उत्पादक से संबंधित नहीं है जिसने मूल जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था ।

21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने इस आधार पर विरोध किया है कि प्रथमतः प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख), उसकी प्रासंगिकता और न्यू शिपर समीक्षा पर उसकी प्रयोज्यता की गलत व्याख्या की है और द्वितीयतः यह कि वर्तमान न्यू शिपर समीक्षा मामले में पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 को लागू करने के बाद प्राधिकारी ने "संबंधित" शब्द की नियम 22 में उल्लेखानुसार गलत व्याख्या की है और तब इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि आवेदक को

उस निर्यातक से संबंधित पाया गया है जिसने भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था । इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने निम्नानुसार तर्क दिया है कि :-

- (i) चूंकि पाटनरोधी नियमावली नियम 2 (ख) को छोड़कर कानून में कहीं भी संबंधित शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है अतः प्राधिकारी ने इस बात की अनदेखी की है कि यदि एक शब्द का उपयोग कानून में कई स्थानों में किया गया है तो उस शब्द को वही अर्थ प्रदान किया जाना चाहिए जैसा कि नियमों में विशेष रूप से दिया गया है । चूंकि नियम 2 (ख) के संदर्भ में संबंधित शब्द को परिभाषित किया गया है, इसलिए वर्तमान प्रयोजन के लिए भी उसी परिभाषा का उपयोग किया जाना चाहिए ।
 - (ii) नियम 22 और नियम 2(ख) दोनों में "संबंधित" शब्द का उल्लेख है और इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को नियम 22 के प्रयोजनार्थ नियम 2(ख) के अंतर्गत यथानिर्दिष्ट "संबंधित" शब्द की परिभाषा पर भरोसा करना चाहिए या उसका हवाला देना चाहिए या उसकी भावना का आदर करना चाहिए ।
22. अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि सर्वप्रथम प्राधिकारी को पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत शुरू की गई न्यू शिपर समीक्षा में नियम 2(ख) की प्रयोज्यता की जांच करनी चाहिए जैसा कि आवेदक ने तर्क दिया है । इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को परिभाषित किया गया है और नियम 2(ख) में यथापरिभाषित संबंध की व्याख्या निम्नानुसार है :-

"स्पष्टीकरण-इस खंड के प्रयोजनार्थ, -

- (i) उत्पादकों को केवल उसी स्थिति में निर्यातकों या आयातकों से संबंधित माना जाएगा यदि,-
 - (क) उनमें से कोई एक दूसरे पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण रखता हो; अथवा
 - (ख) दोनों ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा नियंत्रित हों; अथवा
 - (ग) दोनों मिलकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे व्यक्ति को नियंत्रित करते हों बशर्ते इस बात पर विश्वास करने या आशंका करने का आधार हो कि उनका संबंध का प्रभाव ऐसा है जिससे उत्पादक असंबंधित उत्पादकों से अलग प्रकार का व्यवहार करते हों।
- (ii) किसी उत्पादक को दूसरे उत्पादक पर नियंत्रण रखने वाला तभी माना जाएगा जब उत्पादक उस अन्य उत्पादक पर दबाव डालने या निर्देश देने की विधिक या प्रचालनात्मक स्थिति में हो ।"

23. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि नियम 22 का संगत भाग निम्नानुसार है :-

"निर्दिष्ट प्राधिकारी संबंधित निर्यातक देश के ऐसे किसी भी निर्यातक अथवा उत्पादक, जिसने जांच की अवधि के दौरान भारत को उस उत्पाद का निर्यात नहीं किया है, के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवधिक समीक्षा करेंगे, बशर्ते ये निर्यातक अथवा उत्पादक यह सिद्ध करते हैं कि वे निर्यातक देश के किसी निर्यातक अथवा उत्पादक से सम्बद्ध नहीं हैं, जिन पर उस उत्पाद हेतु पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है।"

24. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि नियम 2(ख) में उल्लिखित संबंध घरेलू उद्योग का संबद्ध वस्तु के निर्यातकों या आयातकों के साथ संबंध की पुष्टि करने के प्रयोजनार्थ विशिष्ट है जबकि नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत पुष्टि किए जाने वाले निर्यातकों के बीच संबंध में निर्यातक देश के निर्यातकों के बीच संबंध की परिकल्पना की गई है। अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत शुरू की गई न्यू शिपर समीक्षा पर नियम 2(ख) लागू नहीं होता है जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान मामले में आवेदक के अनुरोधानुसार इन कंपनियों पर नियम 2(ख) के स्पष्टीकरण को लागू करने की जरूरत नहीं है।

25. प्राधिकारी आगे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि न्यू शिपर समीक्षा नियम 22 के अंतर्गत शुरू की जाती है और नियम 22 में संबंध के बारे में निम्नलिखित अभिव्यक्ति पहले से ही है- "यह निर्यातक या उत्पादक यह प्रदर्शित करते हैं कि वे निर्यातक देश में किसी निर्यातक या आयातक या उत्पादक से संबंधित नहीं हैं" - प्राधिकारी के लिए नियम 22 के अंतर्गत संबंध की पुष्टि करनी अपेक्षित होती है न कि नियम 2(ख) के अंतर्गत। अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि न्यू शिपर समीक्षा के मामले में प्राधिकारी को नियम 22 के अंतर्गत संबंध की पुष्टि करना होता है।

26. यह निष्कर्ष निकालने के बाद कि न्यू शिपर समीक्षा के मामले में संबंध की पुष्टि नियम 22 के अंतर्गत करनी होती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी ने नियम 22 के अंतर्गत पुष्टि हेतु अपेक्षित संबंध के प्रकार का भी निर्धारण किया है। इस संबंध में प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि न्यू शिपर समीक्षा के मामले में चूंकि संबंध की पुष्टि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अंतर्गत करनी अपेक्षित नहीं होती है और संबंध को नियम 22 में संबंध को शासित करने वाली निम्नलिखित अभिव्यक्ति - "यह निर्यातक या उत्पादक यह प्रदर्शित करते हैं कि वे निर्यातक देश में किसी निर्यातक या आयातक या उत्पादक से संबंधित नहीं हैं" - के अनुसार देखना होता है। इसलिए प्राधिकारी के लिए नियम 2(ख) के अनुसार अर्थ की आगे और पात्रता समझे बिना अथवा उसकी व्याख्या किए बिना अथवा अन्यथा नियम 22 में "संबंधित" शब्द के सामान्य अर्थ को लेकर नियम 22 में संबंध की पुष्टि करनी अपेक्षित होती है।

27. यह निर्णय लेने के बाद कि न्यू शिपर समीक्षा मामले में प्राधिकारी के लिए नियम 2(ख) के अनुसार अर्थ की आगे और पात्रता समझे बिना अथवा उसकी व्याख्या किए बिना अथवा अन्यथा नियम 22 में "संबंधित" शब्द के सामान्य अर्थ को लेकर नियम 22 में संबंध की पुष्टि करनी अपेक्षित होती है। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में प्राधिकारी के लिए दो और चीजों का निर्धारण करना भी अपेक्षित होता है। प्रथम यह निर्धारण किया जाना है कि आवेदक न्यू शिपर ने मूल जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया। द्वितीयतः यह निर्धारित करना होता है कि आवेदक न्यू शिपर संबद्ध देश में ऐसे किसी निर्यातक या उत्पादक से संबंधित भी नहीं हैं जिसने मूल जांच अवधि में भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था। दूसरे बिन्दु के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी के लिए आगे और यह निर्धारित करना होता है कि क्या आवेदक न्यू शिपर के संबद्ध देश में ऐसे निर्यातक या उत्पादक के साथ संबंध की पुष्टि होती है जिसने "मूल जांच अवधि के संदर्भ में" या आवेदक के तर्क के अनुसार "न्यू शिपर के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा भूतलक्षी प्रभाव चुनी गई जांच अवधि के संदर्भ में" भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह अनुरोध किया है कि प्रकटन विवरण में विगत संबंध की जांच कर नियम 22 की गलत व्याख्या की गई है जबकि केवल वर्तमान संबंध ही प्रासंगिक है, प्रकटन विवरण में कानून की अनदेखी की गई है और संबंध की जांच मूल जांच के परिप्रेक्ष्य में की गई है जबकि भारतीय कानून के नियम 22 और डब्ल्यू टी ओ करार के अनुच्छेद 9.5 में वर्तमान संबंध पर विचार करने का प्रावधान है, यह कि विगत संबंध का कोई महत्व नहीं होता है, यह कि समूचे संबंध की जांच वर्तमान अवधि अर्थात् निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा चुनी गई जांच अवधि के संदर्भ में करनी होती है और यह कि ऐसे संबंध की जांच मूल जांच की जांच अवधि के बारे में नहीं की जा सकती।

28. जहां तक प्रथम बिन्दु का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने मूल जांच अवधि में भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया। दूसरे बिन्दु के बारे में प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि चूंकि नियम 22 के अंतर्गत न्यू शिपर समीक्षा संदर्भाधीन निर्यातक देश के ऐसे निर्यातकों या उत्पादकों के लिए की जाती है जिन्होंने मूल जांच अवधि में भारत को उत्पाद का निर्यात नहीं किया है, निर्यातक देश के ऐसे निर्यातकों या उत्पादकों के साथ जिन्होंने भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था, आवेदक के संबंध की जांच आवेदक के तर्क के अनुसार केवल वर्तमान जांच अवधि में और मूल जांच अवधि में भी करनी होती है।

29. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह निर्णय लेने के बाद कि न्यू शिपर समीक्षा नियम 22 के अंतर्गत शुरू की गई है। (i) प्राधिकारी के लिए नियम 22 के अंतर्गत संबंध की पुष्टि करनी अपेक्षित होती है न कि नियम 2(ख) के अंतर्गत, (ii) आवेदक न्यू शिपर का निर्यातक देश के ऐसे निर्यातकों या उत्पादकों के साथ संबंध का निर्धारण केवल वर्तमान जांच अवधि तथा मूल जांच अवधि में भी करनी अपेक्षित होती है जिन्होंने भारत को उत्पाद का निर्यात किया था, और (iii) संबंध की पुष्टि अर्थ की पात्रता या विस्तार के बिना "संबंधित" शब्द को साधारण अर्थ देकर अपेक्षित होती है। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि अब प्राधिकारी के लिए आवेदक मै. कोडक (चीन)

ग्राफिक्स कम्युनिकेशन्स लि. तथा सेकेंड फिल्म कंपनी, जो चीन में ऐसी कंपनी है जिसने मूल जांच अवधि में भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था, के बीच संबंध की पुष्टि करनी अपेक्षित है।

30. जहां तक आवेदक मै. कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशन्स लि. तथा सेकेंड फिल्म कंपनी, के बीच संबंध का प्रश्न है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह तर्क दिया है कि सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) जिसने मूल जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था, वह न तो आवेदक से संबंधित है और न ही लकी फिल्म कंपनी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है जैसा कि प्रकटन विवरण में उल्लेख किया गया है। आवेदक ने अपने तथ्य निम्नानुसार प्रस्तुत किए हैं :-

(क) लकी फिल्म ग्रुप कारपोरेशन (लकी ग्रुप) नियंत्रक कंपनी है। लकी फिल्म कंपनी (एल एफ सी) विचाराधीन उत्पाद में शामिल नहीं है और यह लकी ग्रुप की सहायक कंपनी है जिसके पास नियंत्रणकारी स्वामित्व है।

(ख) सेकेंड फिल्म कंपनी (एस एफ सी) लकी ग्रुप कारपोरेशन (लकी ग्रुप) की 100% पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है जिसने विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन/बिक्री की है। एस एफ सी ने मूल जांच अवधि में भारत को निर्यात किए हैं।

(ग) कोडक (चीन) कंपनी लिमिटेड (के सी एल) और कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट लि. (के आई सी एल) ईष्टमैन कोडक की प्रमुख सहायक कंपनियां हैं जबकि के सी एल और के आई सी एल की संयुक्त रूप से कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशन्स लि (के जी सी सी एल) अर्थात् दृश्यमान न्यू शिपर में 100% हिस्सेदारी है।

(घ) ईष्टमैन कोडक के कोडक (चीन) कं. लि. (के सी एल) तथा कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट लि. (के आई सी एल) के जरिए लकी फिल्म कंपनी लिमिटेड (एल एफ सी में 20 प्रतिशत शेयर हैं)

31. इस संबंध में प्राधिकारी ने तथ्यों की पुनः जांच की है और यह भी नोट किया है रिकार्डों के सत्यापन के दौरान प्राधिकारी ने कोडक (चीन) कंपनी लि. तथा कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. की वर्ष 2004 की वार्षिक रिपोर्टों का अध्ययन किया। इन वार्षिक रिपोर्टों में उल्लिखित कुछेक प्रमुख मुद्दे और इस जांच के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता निम्नानुसार है :-

(कोडक(चीन) कंपनी लि. की *** की वार्षिक रिपोर्ट)

"कोडक और लकी ग्रुप के बीच सहयोग कार्यवाही संविदा तथा *** ने कोडक तथा लकी ग्रुप एवं लकी फिल्म (सामूहिक रूप से "लकी") के बीच निष्पादित विपणन करार के अनुसरण में कंपनी लकी के सहयोग हेतु बदले में नकदी, कुछेक परिसंपत्तियों तथा कुछ प्रशिक्षण सेवाओं के प्रावधान का उपयोग करेगी और उसके लकी ग्रुप की स्वामित्व वाली लकी फिल्म में ***% इक्विटी शेयर होंगे।"

(कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. की *** की वार्षिक रिपोर्ट)

"कोडक और लकी ग्रुप के बीच *** में निष्पादित और वाणिज्य मंत्रालय द्वारा *** में अनुमोदित सहयोग कार्यवाचा संविदा के अनुसरण में कंपनी ने *** में *** आर एम बी की लागत पर लकी ग्रुप से लकी फिल्म कंपनी लि. में ***% इक्विटी शेयर अर्जित किए ।"

"कंपनी का लकी फिल्म, कोडक (चीन) कंपनी लिमिटेड तथा कोडक (युक्सी) कंपनी लि. के वित्त और प्रचालनों पर अत्यधिक प्रभाव है और इसीलिए यह इक्विटी पद्धति को अपनाकर इन कंपनियों में निवेश का हिसाब रखती है ।"

32. उपलब्ध तथ्यों से प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आवेदक मै. कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशंस लि. तथा सेकेंड फिल्म कंपनी, जिसने मूल जांच अविध में भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था, के बीच संबंध की पुष्टि निम्नलिखित आधार पर होती है :-

- (i) कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशंस लि. अर्थात् आवेदक न्यू शिपर कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. तथा कोडक (चीन) कंपनी लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है ।
- (ii) कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. तथा कोडक (चीन) कंपनी लि. नियंत्रक कंपनी ईष्टमैन कोडक की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनियां हैं ।
- (iii) ईष्टमैन कोडक के कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. (***% शेयर) तथा कोडक (चीन) कंपनी लि. (***% शेयर) के जरिए लकी फिल्म कंपनी के 20% शेयर हैं ।
- (iv) कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. की *** की वार्षिक रिपोर्ट में यह दर्ज है कि "कोडक और लकी ग्रुप के बीच *** में निष्पादित और वाणिज्य मंत्रालय द्वारा *** में अनुमोदित सहयोग कार्यवाचा संविदा के अनुसरण में कंपनी ने *** में *** आर एम बी की लागत पर लकी ग्रुप से लकी फिल्म कंपनी लि. में ***% इक्विटी शेयर अर्जित किए ।"
- (v) कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. की *** की वार्षिक रिपोर्ट में यह भी दर्ज है कि "कंपनी का लकी फिल्म, कोडक (चीन) कंपनी लिमिटेड तथा कोडक (युक्सी) कंपनी लि. के वित्त और प्रचालनों पर अत्यधिक प्रभाव है और इसीलिए यह इक्विटी पद्धति को अपनाकर इन कंपनियों में निवेश का हिसाब रखती है ।"
- (vi) उपर्युक्त बिन्दु सं. (ii), (iii), (iv) और (v) से एक ओर कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कं. लि. तथा कोडक(चीन) कंपनी लि. के बीच और दूसरी ओर लकी फिल्म कंपनी के बीच संबंध की पुष्टि होती है ।

- (vii) लकी ग्रुप, चीन जन.गण. (चीन लकी ग्रुप कार्पोरेशन) जिसकी स्थापना राज्य की स्वामित्व वाली कंपनी के रूप में की गई थी, नियंत्रक कंपनी है, जिसका लकी फिल्म कंपनी पर नियंत्रणकारी स्वामित्व है ।
- (viii) लकी ग्रुप, चीन जन.गण. की भी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी-सॅकेड फिल्म कंपनी है ।
- (ix) उपर्युक्त बिनदु सं. (vii) तथा (viii) से लकी फिल्म कंपनी और सॅकेड फिल्म कंपनी के बीच संबंध की पुष्टि होती है ।
- (x) कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. तथा लकी फिल्म कंपनी के बीच संबंध की पुष्टि की गई है ; और कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशंस लि. अर्थात् आवेदक न्यू शिपर कोडक(चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. की सहायक कंपनी है, कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशंस लि.- आवेदक न्यू शिपर तथा लकी फिल्म कंपनी के बीच भी संबंध की पुष्टि होती है ।
- (xi) इसके अलावा, चूंकि लकी फिल्म कंपनी और सॅकेड फिल्म कंपनी के बीच भी संबंध की पुष्टि हुई है इसलिए कोडक (चीन) ग्राफिक्स कम्युनिकेशंस लि.- आवेदक न्यू शिपर तथा सॅकेड फिल्म कंपनी के बीच भी नियम 22 के अंतर्गत यथापेक्षित "संबंधित" शब्द को साधारण अर्थ देकर नियम 22 के अंतर्गत संबंध की पुष्टि होती है ।

33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसे कुछ अन्य मुद्दे भी हैं जिन्हें आवेदक ने अपने अनुरोधों में उठाया है । इस संबंध में प्राधिकारी निम्नानुसार नोट करते हैं :-

34. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह तर्क दिया है कि नियम 22 के अंतर्गत समीक्षा की प्रकृति मामला विशिष्ट होती है जिसका उद्देश्य ऐसे निर्यातक/उत्पादक के लिए अलग मार्जिन निर्धारित करना है न कि पूर्ण जांच होती है जैसा कि नियम 22 के प्रावधान के अनुसार पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए अपेक्षित है । नियम 22 के अंतर्गत कार्रवाई निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह प्रदर्शित करने के बाद शुरू की जाती है कि ऐसा निर्यातक/उत्पादक निर्यातक देश के किसी निर्यातक/उत्पादक से संबंधित नहीं है जिसने उस अवधि के दौरान निर्यात किया था जो नियम 5 के अंतर्गत जांच की विषय वस्तु थी ।

35. उपर्युक्त तर्क के बारे में प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि नियम 22 के अंतर्गत संबंध का निर्धारण निश्चित तौर पर मामला विशिष्ट है जिसके लिए विशेष न्यू शिपर समीक्षा मामले में संबंध की उचित जांच अपेक्षित होती है । तदनुसार प्राधिकारी ने वर्तमान मामले में नियम 22 के अंतर्गत संबंध का निर्धारण किया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि "संबंध" शब्द का आगे और कोई विस्तार किए बिना इसका साधारण अर्थ लेकर प्राधिकारी ने ऐसे निर्यातक से संबंधित होना पाया है जिसने मूल जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था ।

36. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह तर्क दिया है कि "संबंधित" शब्द का उद्देश्य और प्रयोजन यह देखना होता है कि क्या ऐसा संभावित उत्प्लंघनकारी संबंध विद्यमान है जिसके जरिए पहले से लगाए गए पाटनरोधी शुल्क का उदाहरणार्थ कंपनी का "शैल" बनाकर या उत्पाद के लिए एकमात्र एजेंट की नियुक्ति कर अपवंचन हो सकता है ।

37. जहां तक उपर्युक्त तर्क का संबंध है, प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि नियम 22 के अंतर्गत प्राधिकारी के लिए संबंध के प्रकार या प्रयोजन को आगे और विस्तार दिए बिना उसे साधारण अर्थ देना अपेक्षित है और तदनुसार प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि नियम 22 के अनुसार, "संबंधित" शब्द को साधारण अर्थ देकर आवेदक ऐसे निर्यातक से संबंधित है जिसने मूल जांच अवधि में संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था ।

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने नियम 22 की गलत व्याख्या की है और केवल उनके मामलों की समीक्षा अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु करनी अपेक्षित होती है जिन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत को उत्पाद का निर्यात किया था यदि वे "संबंधित" पाए जाते हैं ।

39. उपर्युक्त के संबंध में प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि नियम 22 के अंतर्गत प्राधिकारी के लिए संबंध के प्रकार या प्रयोजन को आगे और विस्तार दिए बिना उसे साधारण अर्थ देना अपेक्षित है और तदनुसार प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि नियम 22 के अनुसार, "संबंधित" शब्द को साधारण अर्थ देकर आवेदक ऐसे निर्यातक से संबंधित है जिसने मूल जांच अवधि में संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था ।

40. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने "अत्यधिक प्रभाव" तथा "नियंत्रण" शब्द के भेद और महत्व को नहीं समझा है और लेखा मानकों के अंतर्गत संबंधित पक्षकारों की परिभाषा की भी अनदेखी की है जिसमें भी यह सिद्ध किया गया है कि दोनों कंपनियां संबंधित नहीं हैं । आवेदक ने यह तर्क दिया है कि मात्र "अत्यधिक प्रभाव" का तात्पर्य पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के उद्देश्य और प्रयोजन के अनुसार संबंध से नहीं होता है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि "अत्यधिक प्रभाव" के बारे में आवेदक ने तर्क दिया है कि (i) नियंत्रण का तात्पर्य "निर्देश देने के प्राधिकार" से है, (ii) प्राधिकारी ने "भागीदारी के प्राधिकार" को "निर्देश देने के प्राधिकार" के बराबर माना है; और (iii) भागीदारी का प्राधिकार उस स्थिति में पूर्णतः असंगत है जब ऐसे प्राधिकार में निर्देश देने का प्राधिकार न हो । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने एक कं. (कोडक) के कथन पर भरोसा किया और दूसरी कं. (लकी) के कथन की अनदेखी की ।

41. जहां तक आवेदक के उपर्युक्त तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोडक चीन (इन्वेस्टमेंट) लि. की *** की वार्षिक रिपोर्ट में उल्लिखित "अत्यधिक प्रभाव" न केवल वित्त पर है अपितु लकी फिल्म के प्रचालनों पर भी है । अतः दोनों कंपनियों के कथनों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह कहना तर्कसम्मत नहीं है कि वाणिज्यिक उद्यम के मामले में किसी वाणिज्यिक उद्यम के वित्त और प्रचालनों पर अत्यधिक प्रभाव से उक्त उद्यम के

वाणिज्यिक लक्ष्यों की पहल करने के लिए निर्देश देने का प्राधिकार मिल जाता है। उस सीमा तक प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबंध की पुष्टि होती है।

42. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह तर्क दिया है कि इस बात को मानते हुए परंतु स्वीकार न करते हुए कि नियम 2(ख) के अंतर्गत संबंधित पक्षकारों की परिभाषा लागू की जा सकती है तो लेखा मानकों या अन्य किसी संविधि में उल्लिखित संबंधित पक्षकार की परिभाषा को संगत माना जाना चाहिए और उसे "संबंधित" शब्द के अर्थ को तय करने के लिए उपयोगी माना जाना चाहिए।

43 उपर्युक्त के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि लेखा मानक 18 के अनुसार "अत्यधिक प्रभाव" का तात्पर्य किसी उद्यम के वित्तीय और/अथवा प्रचालन नीति संबंधी निर्णयों में भागीदारी करने से है न कि इन नीतियों पर नियंत्रण रखने से। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोडक चीन (इन्वेस्टमेंट) लि. की *** वार्षिक रिपोर्ट में उल्लिखित "अत्यधिक प्रभाव" न केवल लकी फिल्म कंपनी के वित्त पर है अपितु, प्रचालनों पर भी है। अतः लेखा मानक 18 के अंतर्गत संबंधित पक्षकार की परिभाषा के अनुसार भी प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि यह कहना तर्कसम्मत है कि किसी वाणिज्यिक उद्यम के मामले में किसी वाणिज्यिक उद्यम के वित्त और प्रचालनों पर अत्यधिक प्रभाव से उक्त उद्यम के वाणिज्यिक लक्ष्यों की पहल करने के लिए निर्देश देने का प्राधिकार मिल जाता है। अतः कोडक चीन (इन्वेस्टमेंट) लि. का लकी फिल्म कंपनी पर अत्यधिक प्रभाव है क्योंकि इस कंपनी का लकी फिल्म कंपनी के वित्त और प्रचालनों पर अत्यधिक प्रभाव है।

44. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह भी तर्क दिया है कि याचिका में निर्यातक सेंकेड फिल्म कंपनी जिसने मूल जांच अवधि में भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था, का उल्लेख नहीं है क्योंकि आवेदक सेंकेड फिल्म कंपनी (जो लकी ग्रुप की है) से संबंधित नहीं थी और इसलिए इन कंपनियों के नाम आवेदक ने याचिका में नहीं दिए थे।

45. जहां तक आवेदक के उपर्युक्त तर्क का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि (i) आवेदक कंपनी कोडक (चीन) कंपनी तथा कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, (ii) कोडक (चीन) इन्वेस्टमेंट कंपनी की *** वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट में यह स्पष्ट उल्लेख है कि कंपनी का लकी फिल्म, कोडक (चीन) कंपनी लिमिटेड तथा कोडक (दुक्सी) कंपनी लि. के वित्त और प्रचालनों पर अत्यधिक प्रभाव है और इसीलिए यह इक्विटी पद्धति को अपनाकर इन कंपनियों में निवेश का हिसाब रखती है, (iii) चीन लकी ग्रुप कार्पोरेशन (लकी ग्रुप) का लकी फिल्म कंपनी पर प्रबंधन नियंत्रण है, (iv) सेंकेड फिल्म कंपनी लकी ग्रुप की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, (v) सेंकेड फिल्म कंपनी और लकी फिल्म कंपनी स्पष्ट रूप से संबंधित कंपनियां हैं; और (vi) सेंकेड फिल्म कंपनी ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबंध की पुष्टि करने वाले उपर्युक्त साक्ष्य के आधार पर आवेदक को इस बात की जानकारी होनी चाहिए थी कि संबंध से जुड़े इन सभी तथ्यों का खुलासा

सर्वप्रथम याचिका में ही किया जाए । प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी को इन नामों की जानकारी केवल घरेलू उद्योग के अनुरोध के रूप में और बाद में रिकॉर्डों के सत्यापन के दौरान मिली ।

46. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह भी तर्क दिया है कि प्राधिकारी द्वारा निर्धारित की गई वर्तमान व्याख्या से ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी जिसमें विदेश में एक से अधिक निर्माण कंपनी के समूह पर उक्त कंपनी समूह के रूप में शुल्क लगेगा जिसने संगत अवधि के दौरान उत्पाद का निर्यात किया था और अन्य सभी ग्रुप कंपनियां केवल इस वजह से भारतीय बाजार में अपना निर्यात करने से हमेशा वंचित हो जाएंगी कि उनका उस कंपनी से "संबंध" है जिसने संगत अवधि में निर्यात किया था ।

47. उपर्युक्त तर्क के बारे में प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि नियम 22 में उल्लिखित "संबंधित" शब्द के साधारण अर्थ को ध्यान में रखते हुए और इस व्याख्या से प्राधिकारी से यह निष्कर्ष निकाल चुके हैं कि आवेदक न्यू शिपर और सेंकेंड फिल्म कंपनी जिसने मूल जांच अवधि में भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था, के बीच संबंध विद्यमान है ।

48. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने विट्रीफाइड टाइलों के मामले में माननीय सेस्टेट के निर्णय पर भी भरोसा करने की मांग की है ताकि प्राधिकारी से संबंध के मुद्दे के निर्धारण का आग्रह किया जा सके । उक्त निर्णय का प्रचालनात्मक भाग नीचे पुनः प्रस्तुत है ।

"निर्दिष्ट प्राधिकारी को सर्वप्रथम "न्यू शिपरों" की मौलिकता की पर्याप्त जांच और निर्यातक देश में ऐसे निर्यातकों या उत्पादकों से संबंधित न होने की जांच द्वारा दुरुपयोग की किसी संभावना से इंकार करना चाहिए जिनके उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लागू है । नए निर्यातकों/उत्पादकों के पृथक मार्जिन के निर्धारण हेतु नियम 22 के अंतर्गत समीक्षा की शुरुआत ही उनके इस प्रदर्शन पर निर्भर होगी कि वे "संबंधित" नहीं हैं । यह इन शब्दों से स्पष्ट होता है कि "... बशर्ते ये निर्यातक या उत्पादक यह प्रदर्शित करें कि वे संबंधित नहीं हैं..." अतः जब तक वे यह प्रदर्शित नहीं करते हैं कि वे "संबंधित" नहीं हैं, तब तक निर्दिष्ट प्राधिकारी सामान्यतः समीक्षा की शुरुआत नहीं करेंगे । "न्यू शिपर" समीक्षा नियम के दुरुपयोग की संभावना को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करने के लिए बाध्य हैं कि क्या नियम 22 के अंतर्गत समीक्षा की मांग करने वाला न्यू शिपर "संबंधित" है या नहीं । "

49. माननीय न्यायाधिकरण के उपर्युक्त निर्णय के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस निर्णय में प्राधिकारी के लिए यह सुनिश्चित करना अपेक्षित है कि आवेदक न्यू शिपर पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने वाले या उत्पादन करने वाले से संबंधित नहीं है जिसके बारे में पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत निर्धारण करने का प्राधिकारी का हर हालत में कर्तव्य बनता है ।

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह भी तर्क दिया है कि वर्तमान मामले में कोडक की शेरधारिता सर्कुलर वीविंग मशीनों के मामले में शेरधारिता के प्रतिशत से काफी कम है जिसमें प्राधिकारी ने यह माना है कि मात्र शेरधारिता का तात्पर्य पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर नियंत्रण के प्रयोग से नहीं होता है और अधिकांश शेरधारिता अर्थात् 50% से अधिक की शेरधारिता से ही विधिक नियंत्रण हासिल होता है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह भी तर्क दिया है कि प्राधिकारी का यह निर्णय गलत है कि सर्कुलर वीविंग मशीनों का मामला इस वजह से न्यू शिपर समीक्षा के मामले में प्रयोज्य/संगत नहीं है कि वह घरेलू उद्योग के क्षेत्र के बारे में है क्योंकि घरेलू उद्योग के क्षेत्र के प्रयोजन हेतु प्रदत्त अपवाद का उद्देश्य और न्यू शिपर समीक्षा के प्रयोजन का सीधे यह तात्पर्य निकलता है कि अपवाद का वही या समनुरूप उद्देश्य है।

51. उपर्युक्त तर्क के बारे में प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि चूंकि सर्कुलर वीविंग मशीनों के मामले में निर्णय घरेलू उद्योग के क्षेत्र के बारे में है, इसलिए इसे वर्तमान मामले में लागू नहीं किया जा सकता जिसमें संबंध का निर्धारण नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत किया जाना है।

52. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक ने यह भी तर्क दिया है कि यद्यपि यह मान भी लिया जाए कि पूर्व में संबंध था, तथापि वास्तविकता यह है कि कोडक ने अगस्त, 2006 में लकी ग्रुप को विनिवेश करने की अपनी मंशा के बारे में सूचित कर दिया था, नवंबर, 2007 में लकी फिल्म कं. लि. में अपने सभी निवेश बेच दिए थे तथा जनवरी, 2008 में विनिवेश प्रक्रिया पूरी हुई थी और इसीलिए जनवरी, 2008 के बाद कोई संबंध नहीं था। ऐसे मामले में प्रतिबंध लगाने या निर्देश देने का प्रश्न नहीं उठता और इसलिए यह स्पष्ट हो जाता है कि बीच की अवधि में केवल कागजी संबंध था।

53. आवेदक के उपर्युक्त तर्क के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि विनिवेश का निर्णय अगस्त, 2006 में ही सूचित किया गया था जिससे यह पता चलता है कि मूल जांच अवधि अर्थात् 2005-06 में संबंध था।

निष्कर्ष तथा सिफारिशें:

54. उपर्युक्त के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :-

- (i) पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में उल्लिखित संबंध घरेलू उद्योग के साथ संबंध की पुष्टि करने के प्रयोजनार्थ विशिष्ट हैं और उसका पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के प्रयोजनार्थ संबंध की पुष्टि से कोई लेना-देना नहीं है।

- (ii) न्यू शिपर समीक्षा में संबंध के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत संबंध की पुष्टि करना अपेक्षित होता है ।
- (iii) न्यू शिपर समीक्षा में प्राधिकारी के लिए संबंधित शब्द के साधारण अर्थ पर भरोसा करते हुए पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत संबंध की पुष्टि करना अपेक्षित होता है और प्राधिकारी के लिए ऐसे संबंध की आगे पात्रता या गहनता का पता लगाना अपेक्षित नहीं होता है ।
- (iv) चूंकि नियम 22 के अंतर्गत न्यू शिपर समीक्षा संदर्भाधीन निर्यातक देश में ऐसे निर्यातकों या उत्पादकों के लिए की जाती है जिन्होंने मूल जांच अवधि के दौरान भारत को उत्पाद का निर्यात नहीं किया है । इसलिए आवेदक का निर्यातक देश में उन निर्यातकों या उत्पादकों, जिन्होंने भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया था, के साथ संबंध का निर्धारण केवल आवेदक के तर्क के अनुसार वर्तमान जांच अवधि में परंतु मूल जांच अवधि में भी करना होता है ।
- (v) न्यू शिपर होने का दावा करने वाले आवेदक मै. कोडक (चीन) ग्राफिक कम्युनिकेशंस कं. लि., चीन जन.गण. तथा सेकेंड फिल्म कंपनी जिसने मूल जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु को भारत का निर्यात किया था, के बीच पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत "संबंधित" शब्द के अर्थ के भीतर संबंध की पुष्टि होती है ।
- (vi) उपर्युक्त तथ्यों तथा विधिक स्थिति के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आवेदक मै. कोडक (चीन) ग्राफिक कम्युनिकेशंस कं. लि., चीन जन.गण. को पाटनरोधी नियमावली के नियम 22 के अंतर्गत न्यू शिपर नहीं माना जा सकता और इसलिए वह पृथक पाटन मार्जिन का हकदार नहीं है ।

55. वर्तमान आदेश के कारण केन्द्र सरकार के आदेश के खिलाफ कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 23rd February, 2012

FINAL FINDINGS**(New Shipper Review)**

Subject: New Shipper Review of anti dumping duty imposed on imports of Pre-sensitized Positive Offset Aluminium Plates from Bulgaria, China PR, Malaysia, Singapore and South Korea.

No. 15/13/2009-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995 (hereinafter referred as the Anti Dumping Rules or the Rules) thereof;

Background and Procedure followed

2. M/s. Kodak (China) Graphic Communications Company Ltd., (Producer / Exporter from China PR) filed an application for a New Shipper Review under Rule 22 of Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, and requested the Designated Authority to initiate a New Shipper Review of the anti dumping duty levied vide Customs Notification No. 108/2007 dated 25th September, 2007, on imports of Pre-sensitized Positive Offset Aluminium Plates originating in or exported from China PR, pursuant to the Final Findings dated 23rd August, 2007 issued by the Designated Authority.

3. The Applicant claimed that the Applicant was not related to any of the exporters/producers in China PR presently subject to anti dumping measures in force with regard to the concerned product. Furthermore, it claimed that it had not exported the concerned product during the period of investigation of the original investigation, i.e., 1st

April, 2005 to 31st March, 2006. The Applicant further claimed that the applicant company was incorporated in the year 2005 and commenced its operations in the year 2007 and, therefore, it could not have exported the subject goods to India during the investigation period of the original investigation. The Authority, after prima facie examination of the information submitted by the Applicant and based on the documents submitted, considered it sufficient to justify the initiation of a new shipper review investigation in accordance with the provisions of Rule 22 of the Anti Dumping Rules.

4. The Designated Authority initiated the New Shipper Review under Rule 22 of the AD Rules vide Notification No.15/13/2009-DGAD dated 8th January, 2010. The Authority recommended provisional assessment of all exports of Pre-sensitized Positive Offset Aluminium Plates made by M/s. Kodak (China PR) Graphic Communications Company Ltd (Producer / Exporter) from China PR till the completion of the Review initiated in accordance with Rule 22 of the Indian Anti Dumping Rules. The same was notified vide Customs Notification No.35/2010-Customs on 19th March, 2010. The Domestic Industry in the present New Shipper Review is M/s TeckNova Imaging Systems Ltd.

5. The period of investigation (POI) in this New Shipper Review is from 1st October, 2009 to 31st March, 2010 (6 months).

6. The Authority intimated to the exporting country about the initiation of the New Shipper Review investigation and gave an opportunity to all the interested parties concerned to make their views known in writing within 40 days from the expiry of the POI.

7. The Authority obtained details from the Applicant in the form of Exporter Questionnaire to elicit the relevant information. The said producer / exporter also filed information in the form of a Market Economy Questionnaire, claiming to be operating under market economy conditions.

8. The Authority provided an opportunity to all the interested parties to present their views orally in an oral hearing held on 8th July, 2010. All parties who attended the hearing and presented their views orally were requested to file written submissions. The parties were also advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties in their submissions and offer rejoinders, if any. Thereafter, the Disclosure Statement was issued on 1st November, 2010 inviting comments, if any, from the Applicant and other interested parties.

9. Before issuance of the Final Findings in the present Review, a new incumbent had taken over as the Designated Authority. Therefore, in line with the guidelines given by the Supreme Court in the matter concerning Nylon Tyre Cord Fabrics from China PR, the new Designated Authority held 2nd oral hearing on 7th April, 2011. Subsequent to the 2nd oral hearing, the Applicant and the domestic industry again made their submissions which were duly considered, wherever found relevant, and thereafter, a second Disclosure Statement was

issued on 8th July, 2011, inviting comments, if any, from the Applicant and other interested parties. The submissions made by the Applicant and the Domestic Industry have been duly considered, wherever found relevant, in the Final Findings appropriately.

10. The Authority verified the records of the Applicant New Shipper at its factory premises and Corporate Office in China PR.

11. The Authority made available the public file as per AD Rule 6(7) of the Rules containing non-confidential version of the information/submissions made by various interested parties.

12. *** in the present Final Findings represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

Product under Consideration & Like Article

13. The product under consideration (PUC) in the original investigation was “Pre-sensitized Positive Offset Aluminium Plates”, (also referred to as “PS Plates” or subject goods). The subject goods are primarily used in the printing industry. There are various kinds of Aluminium Offset Plates, designed to suit the quality, speed and requirements of the users and the imaging technology available to them, e.g., Non-Sensitized Grained Plates, Pre-Sensitized Plates (positive and negative working) and Digital Plates (Thermal or Violet or UV sensitive). The thickness of the subject goods ranges between 0.15 mm to 0.40 mm. The product under consideration in this New Shipper Review is “Pre-Sensitized Positive Offset Aluminium Plates with thickness ranging from 0.15 mm to 0.40 mm with a variation of 0.03 mm on either side”, as determined in the original case. However, the PUC does not cover negative plates and digital plates, negative offset plates and all plates other than “Pre-Sensitized Positive Offset Aluminium Plates with thickness ranging from 0.15 mm to 0.40 mm with a variation of 0.03 mm on either side”.

14. There is no argument made by any of the interested parties on the product under consideration and like article. It is noted that the Applicant M/s. Kodak (China PR) Graphic Communications Company Ltd has claimed that goods produced and exported by it are within the meaning of the Rules. In view of the foregoing, the Authority holds that product under consideration in the present investigations is the same as considered in the original investigation, i.e., “Pre-Sensitized Positive Offset Aluminium Plates with thickness ranging from 0.15 mm to 0.40 mm with a variation of 0.03 mm on either side” classifiable under Chapter 84 of the Custom Tariff Act, 1975.

15. The subject goods fall under Chapter 84 of the Custom Tariff Act, 1975 under subheading No. 84425020. The customs classification is, however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

Views expressed by the Interested Parties for the Review

Views of the Applicant:

16. The Applicant, in its written submissions, post-public hearing dated 8 July, 2010, has inter alia, argued:

- i. That the present New Shipper Review petition has been filed by M/s Kodak (China) Graphic Communications Company Limited, China PR (Producer and Exporter) for determination of individual dumping margin.
- ii. That the Applicant has relied upon Rule 22 of the Anti-Dumping Rules read with Article 9.5 of the WTO Agreement on Anti-Dumping, and submitted the legal requirements that the Applicant has not exported the product to India during the period of original investigation, and the Applicant is not related to any of the exporters or producers in the exporting country who are subject to anti-dumping duties on the product.
- iii. That in the present case there is no basis for the allegation that the Applicant or any of its group companies are related to Lucky Group or Second Film Company. Kodak had earlier invested 20% shares in Lucky Film Company (and not Lucky Group). Lucky Film Company is a subsidiary of Lucky Group. Further, Second Film Plant is a subsidiary of Lucky Group. However, the 20% investment in Lucky Film was a mere financial investment and no controlling interest was given to Kodak as is also evident from the public notice issued by Lucky Film Company. In fact, even when Kodak was given one berth in the Board of Directors, there was a clear understanding between Kodak and Lucky Film that the Director of Kodak shall not interfere in the day to day operations of Lucky Film Company. Therefore, there was no controlling right to Kodak and its Director in the Board was just a formality.
- iv. That the Applicant has explained its relation with the Lucky Group and in order to substantiate the position on this issue, the Applicant has sought to rely upon the rationale of the Designated Authority in the case of *Circular Weaving Machines*. The Applicant reiterated that it has no control over Lucky Group.
- v. That the Applicant has not claimed any excessive confidentiality and has rightfully sought confidentiality on the specified issues.
- vi. That the Applicant has claimed “*market economy*” status for themselves.
- vii. That the Applicant has claimed that ELP had no authorization on behalf of the domestic industry to attend the hearing and should not be allowed to make any submissions.
- viii. That the Applicant has claimed that as the written submissions are made by ELP nearly 2 months after the initiation, the submissions must be disregarded by the Authority.

Views of the Domestic Industry:

17. M/s TechNova Imaging Systems, the domestic industry, in their written submissions, post-public hearing dated 8th July, 2010, has, inter alia, argued:

- i. That the New Shipper Review initiation is not in compliance with the law. The manufacturer (Kodak China), exporter (Kodak Singapore) and importer (Kodak India) are related to the manufacturer, exporter and importer from the original investigation. Details of the relationship and proof have been provided.
- ii. That Kodak (China) Co. Ltd. (KCL) and Kodak (China) Investment Co. Ltd. (KICL) are the principal subsidiaries of Eastman Kodak. KCL and KICL jointly held 100% stake in Kodak (China) Graphics Communications Ltd. (KGCCL), i.e., the Ostensible New Shipper. Therefore, Eastman Kodak and KGCCL are clearly related companies. Eastman Kodak also owned 20% share in Lucky Film Company (LFC) during the original POI, and Second Film Plant, a wholly owned subsidiary of LFC, exported the subject goods to India during the POI, but did not cooperate with the Authority in the investigation.
- iii. That Eastman Kodak held 20% stake in LFC (which is owned by Lucky Group) from November 2003 - November 2007. LFC has three wholly owned subsidiaries – Second Film Company (SFC), Lucky Research Institute (LRI) and Lucky Shanghai Paper Mill (LSPM). SFC has made exports of subject goods to India during the original Period of Investigation.
- iv. That the alleged New Shipper has sought to cover up its relationship with each Kodak entity by stating that the same is available on the website, which in fact is not available and reiterated that Kodak Singapore and the Kodak India are related to each other and furthermore are under the control of the same parent.
- v. That in the case of a New Shipper Review, it is not only the control but also the relationship between the parties that is critical. The underlying test is that a party must not derive economic benefit from its own wrong doing. There can be no dispute that through its shareholding in the Lucky Group and in particular in its wholly owned subsidiary the Second Film Company, the Kodak Group has derived economic benefit from the act of dumping in India. Further, it did not participate in the original proceedings and is coming under the garb of a New Shipper to seek indulgence from the Indian anti-dumping Authority.
- vi. That with regard to the claim of the Applicant New Shipper for considering the subject country as a '*market economy*', the claim of the Applicant does not satisfy the necessary criterion for granting market economy status as required under Rule 8, Annexure 1 of the Anti-dumping Rules, 1995 and further that the Applicant has not provided the required information to justify such a claim, nor is the same available in public domain and has sought leave to respond to such information as and when it is placed on record by the New Shipper.
- vii. That the Applicant has been claiming excessive confidentiality with regard to certain issues and that this excessive confidentiality is hindering the ability of M/s TechNova Imaging Systems, the domestic industry to suitably participate in this proceeding. On the

issue of confidentiality, the alleged New Shipper has purportedly replied to certain issues raised by M/s TechNova Imaging Systems vide letter dated 7th July, 2010. M/s TechNova Imaging Systems submits that claiming confidentiality, especially on such a letter, is *ultra vires* the Anti-dumping Rules and contrary to the *ratio* in *Reliance Industries vs. Designated Authority*; 2006 (202) ELT 23 (SC).

viii. That ELP, representing the domestic industry, vehemently denied that it had no authorization to represent and placed on record the Authorization Letter dated January 12, 2010 that TechNova Imaging Systems had issued to ELP. ELP also clarified that the same had been forwarded to the Authority vide letter dated 13th January, 2010.

ix. That the Authority shall not summarily dismiss or reject any submission made by ELP in the instant case and that the Authority has appropriately accepted the submission made by the interested party which was made within time and it has not erred in doing so. It has relied upon *Designated Authority v/s HaldorTopsoe*; 2000 (120) ELT 11 (SCC) and the WTO DSP Report in United States – Anti-Dumping Measures On Certain Hot-Rolled Steel Products - WT/DS184/AB/R and United States – Sunset Reviews of Anti-Dumping Measures On Oil Country Tubular Goods From Argentina - Report of The Appellate Body - WT/DS268/AB/R.

View/Submissions by the Applicant post First and Second Oral Hearings and post First and Second Disclosure Statements:

18. Submissions by the Applicant post First and Second Oral Hearings and post First and Second Disclosure Statements are summarised as under:

i) The Applicant does not agree that they are related to a company subject to anti dumping duties. The documents issued by the Designated Authority contain serious factual and legal errors and require reconsideration by the Designated Authority. It is incorrect appreciation of the facts that:

- a) Eastman-Kodak held 20% stake in Lucky Film Company (LFC) from November 2003 - November 2007. This is confirmed in Kodak's Annual Report of year ended 2003.
- b) LFC has three wholly owned Subsidiaries – Second Film Company (SFC), Lucky Research Institute (LRI) and Lucky Shanghai Paper Mill (LSPM).
- c) SFC has made exports to India during the original Period of Investigation.
- d) Kodak (China) Co. Ltd. (KCL) and Kodak (China) Investment Ltd. (KICL) are principal subsidiaries of Eastman Kodak, whereas, KCL and KICL jointly hold 100% stake in Kodak (China) Graphics Communications Ltd. (KGCCL) i.e. the Ostensible New Shipper. Therefore, Eastman Kodak and KGCCL are clearly related companies. Eastman Kodak also owned 20% in LFC during the POI and a

wholly owned subsidiary of LFC (i.e. SFC) exported to India during the POI, but did not cooperate with the Designated Authority in the investigation.

ii) Thus, the Authority has held without any basis that Second Film Company (SFC) is a wholly owned subsidiary of Lucky Film Company and concluded the two as related companies in term of Rule 22 of AD Rules.

iii) The correct facts of present case are different and are as under:

- a) Lucky Film Group Corporation (Lucky Group) is the holding company. Lucky Film Co. Ltd (LFC) is not involved in product under consideration and is a subsidiary company of Lucky Group that has controlling ownership.
- b) Second Film Company (SFC) is a 100% wholly owned subsidiary of Lucky Group Corporation (Lucky Group) and was involved in production and sales of the product under consideration. SFC has made exports to India during the original Period of Investigation.
- c) Kodak (China) Co. Ltd. (KCL) and Kodak (China) Investment Ltd. (KICL) are principal subsidiaries of Eastman Kodak. Whereas, KCL and KICL jointly hold 100% stake in Kodak (China) Graphics Communications Ltd. (KGCCL) i.e. the Ostensible New Shipper
- d) Eastman Kodak is having 20% Share in Lucky film Co. Ltd (LFC) through Kodak (China) Co. Ltd. (KCL) and Kodak (China) Investment Ltd. (KICL)

iv. The Authority has wrongly interpreted Rule 2(b) of the AD Rules, its relevance and applicability in the present case. The Authority has noted that the relationship referred to in Rule 2(b) is specific for the purposes of establishing the domestic industry and has nothing to do with establishing the relationship for the purposes of Rule 22. The Authority further noted that even if the explanation of relationship described in Rule 2(b) is applied, the relationship is established. The conclusion drawn is factually and legally incorrect and contrary to the past established practice in this regard. Explanation of relationship as defined in Rule 2(b) states as under:

“(i) *Producers shall be deemed to be related to exporters or importers only if,-*

- a) *One of them directly or indirectly controls the other; or*
- b) *Both of them are directly or indirectly controlled by a third person; or*
- c) *Together they directly or indirectly control a third person subject to the condition that there are grounds for believing or suspecting that the effect of the relationship is such as to cause the producers to behave differently from non-related producers.”*

- (ii) *A producer shall be deemed to control another producer when the former is legally or operationally in a position to exercise restraint or direction over the later.*

v. The Authority has not examined and established the relationship in term of Rule 2(b) and has repeated previous conclusion, without recording any reasons and ignoring vital legal and factual submissions made by the Applicant. The Authority holds the following without any basis:

- a) Eastman Kodak and the Petitioner i.e. M/s Kodak (China) Graphics Communications Company Ltd are clearly related to each other.
- b) Eastman Kodak held stake in Lucky Film Company Ltd. during the original period of investigation through Kodak China Investment co. and Kodak China Co. Ltd,
- c) Second Film Company (SFC) is a fully owned company of Lucky Film Co. Ltd. and made exports during the original period of investigation.
- d) Kodak China Co. Ltd, in its Annual Report has recorded that Company has significant influence over the finance and operations of Lucky Film Co. Ltd. and ignored the statement made by Lucky Film Co. Ltd. that Kodak China Co. Ltd. shall not interfere in the decision making process of Lucky Film Co. Ltd.
- e) The relationship between the M/s Kodak (China) Graphics Communications Company Ltd and Second Film Company (SFC) is established within the meaning of Rule 2(b) of the AD Rules.

vi. In the context of the present case, if the explanation of Rule 2(b) is applied on the following set of entities, it would be concluded that there is no relationship:

- a) The first company is M/s. Kodak China Graphics Communications Company Limited, the petitioner in the present case;
- b) The Second Film Company (SFC) was exporting (the subject goods) in that period;
- c) Eastman Kodak - USA, the eventual holding company of the present petitioner and all companies in its control, including Kodak China and Kodak China Investment;
- d) Lucky Film Group Corporation is the holding company of Second Film Company (SFC) and Lucky Film Company Co. Ltd.(LFC).

vii. It is undisputed fact that (a) one of them, i.e., M/s. Kodak China Graphics Communications Company Limited and Second Film Company (SFC) does not directly or indirectly control the other, (b) both of them, i.e., M/s. Kodak China Graphics Communications Company Limited and Second Film Company (SFC) are not directly or indirectly controlled by third person and (c) together they, i.e., M/s. Kodak China Graphics Communications Company Limited and Second Film Company (SFC) directly or indirectly

do not control a third person. Further, one of the companies is not legally or operationally in a position to exercise restraint or direction over the later. Therefore the disclosure statement without examining the correct set of parties holds that relationship is established in term of Rule 2(b). In fact no relationship is established between the two companies in any manner in term of Rule 2(b).

viii. The Authority has wrongly interpreted Rule 22 and proposed to hold that the Applicant cannot be treated as New Shipper within the meaning of Rule 22 of AD Rules. Rule 22(1) has to be viewed in the context of the words “provided that these exporters or producers show that they are not related to any of the exporters or producers in the exporting country who are subject to the anti-dumping duties on the product”, and the nature of review which is confined to determining individual margins. Therefore, the review is initiated to relieve the new exporters who may not in fact be dumping the product that is already subject to anti-dumping duty which is applied even in cases where the exporter/producer did not dump the product in the Indian market. Thus, Rule 22 is linked with the new shipper’s seeking initiation of review by showing that such new shippers were eligible to seek the review. Cases of only those who did not export the product to India during the period of investigation under Rule 5 are required to be reviewed for determining their individual dumping margins, if they are not ‘related’.

ix. The nature of review under Rule 22 is case specific with the purpose of determining individual margins for such exporter/producer, and no full-fledged investigation, as is required for imposing the anti-dumping duty, is contemplated under Rule 22. The proceedings under Rule 22 are initiated after it is shown to the Designated Authority that such exporter/producer is not related to any exporters/producers in the exporting country who exported the subject goods during the period which was the subject matter of the investigation under Rule 5. The exception/restriction incorporated in Rule 22 is designed to prevent misuse of the provision.

x. The objective and purpose of the word “related” is to see whether potentially circumventing relationship exists, through whom the anti-dumping duties already imposed might be circumvented, for example, by creating a “shell” company or appointing a sole agent for the product. The requirement on the part of the new shippers to show that they are not “related” is a corresponding obligation on the part of the Designated Authority to verify that there is no circumvention of anti-dumping duty being attempted by invoking the review.

xi. The Authority has examined relationship by considering wrong set of parties. Rule 22 requires relationship to be examined between the Applicant company and the exporters/producers who are subject to anti-dumping duties. In the context of the current investigations, it implies alleged relationship between the Applicant Company and the Second Film Company. The disclosure statement has not examined at all relationship between these entities. Instead, the disclosure statement has examined relationship between

petitioner Applicant and Lucky Film Co Limited. The disclosure statement contains no reasoning how the applicant companies are or were related the Second Film Company (SFC). In fact, applicant was not even in existence at the time of original period of investigation. Under the circumstances, there is no question of any relationship between the petitioner and the exporter/producer subject to anti-dumping duties. Therefore, the disclosure statement has examined relationship between incorrect set of parties.

xii. The Authority has not appreciated the difference and significance of “significant influence” and ‘control” and also ignores the definition under Accounting Standards which also establish that the two companies are not related. Mere “significant influence” per se does not tantamount to relationship in terms of object and purpose of Rule 22 of Anti-dumping Rules. There are absolutely unambiguous statements made by the two companies concerned i.e. Lucky Film Co Limited and Kodak China Co Limited. The disclosure statement has misinterpreted the two. Also, the Authority has chosen to rely only upon the statement made by one company (Kodak) and chosen to ignore the statement made by other company (Lucky). Express prohibition in participating in the daily business operations and management has been completely ignored, which is the most fundamental requirement for the present purpose. Public Notice issued by Lucky Film Co Limited dated 30th Oct 2003 “Report on change of shareholding” stated as under:

“6. Recommendation by Directors:-

Kodak Investment and/or Kodak China shall together have the right to recommend one director to the board of Lucky Film Co Limited. However, they shall not participate in the daily business operation and management of Lucky Film Co Limited”

xiii. Kodak China Co Limited, in its annual report for 2004, recorded as under:

*“Pursuant to cooperation framework contract between Kodak and Lucky Group in *** and approved by Ministry of Commerce in ***, The company acquired ***% of equity shares of Lucky Film Co Limited from Lucky Group at a cost of *** in ***.*

The company has significant influence over the finance and operations of Lucky Film, the Kodak (China) Co Limited and Kodak (Wuxi) Co Limited and therefore, it accounts for the investments in these companies in equity method”

xiv. From the above, it would be seen that while one company stated existence of “significant influence”, the other stated “lack of control”. There is absolutely no contradiction whatsoever. While significant influence implies “authority to participate”, control implies “authority to give direction”. The disclosure statement has equated “authority to participate” with “authority to give direction”. Further, the disclosure statement has chosen to ignore that

“authority to give direction” is relevant for the purpose of anti dumping law. Authority to participate is entirely irrelevant when such authority lacks authority to give direction. Also, the disclosure statement has chosen to rely only upon the statement made by one company (Kodak) and chosen to ignore the statement made by other company (Lucky). Express prohibition in participating in the daily business operations and management has been completely ignored, which is most fundamental requirement for the present purpose.

xv. The Authority has drawn wrong interpretation of Rule 22 by examining past relationship whereas the present relationship alone is relevant. The disclosure statement ignores the law and has examined the relationship in the context of original period of investigation. Rule 22 of the Indian Rules and Article 9.5 of the WTO Agreement provides for consideration of present relationships. Past relationships are in any case of no consequences. This become more than evident from the plain reading of Rule 22 and Article 9.5, which has prescribed for a determination that (a) such producers or exporters should not have exported in the original investigation period which implies condition for the past period, and (b) such applicants “are not related” to a “company attracting anti-dumping duty” (which implies current relationship). Thus, the entire relationship has to be examined with reference to the current period, i.e., the investigation period chosen by the Designated Authority. Such relationship cannot be examined with regards to the investigation period of the original investigation.

xvi. The Designated Authority has alleged that at the time of filing the application the alleged relationship was not disclosed. It is incorrect to say that the alleged relationship was not disclosed to the Designated Authority at the time of filing the application. Applicant disputes any such relationship. When the Applicant does not consider and accept that there is any alleged relationship, the question of disclosure of the same by the applicant does not arise. On demand from the Authority, the Applicant has cooperated with Designated Authority and provided information even when the Applicant continues to consider that there was no relationship with these companies within the meaning of Rule 22.

xvii. Anti-dumping legislation seeks to restrict unfair pricing, but cannot be read to encourage restriction on fair trade practices. The legislation permits the Govt. of India to impose anti-dumping duties on imports of an article, provided it is established that such exports of the product have caused or threaten to cause injury to the domestic industry or materially retards the establishment of an industry in the Country. The anti-dumping duties can be charged only if the charge of dumping is established. Such anti-dumping duties are required to be restricted to an amount considered necessary to address injury to the domestic industry. Thus, while the objective of imposition of anti-dumping duties is to penalize erring exporters who had resorted to dumping practices, the Govt. of India imposes anti-dumping duties, by practice, even on producers/exporters, who have not resorted to dumping in the relevant period or who were not even in existence at the time of previous investigations. The

practice is in vogue in order to ensure effective remedy and to prevent possible abuse/misuse/circumvention of anti-dumping duties imposed on erring exporters.

xviii. Appreciating that anti-dumping duties would get imposed even on producers who have not resorted to dumping or who were not even in existence during the relevant period, the Govt. of India has made specific provisions in consonance with the WTO Agreement on Antidumping to permit such producers who have not exported their product during the relevant period to seek their own individual anti-dumping duties. Further, appreciating that such permission might be misused by erring producers, the rules provide that such individual duties should, however, be specified only if such producers establish that they were not related to the producer/exporter who had earlier exported the product during the previous relevant period (and therefore who are subject to anti-dumping duties by virtue of such previous exports during the previous relevant period). The Designated Authority is required to consider the purpose and objective of exception provided under the law. The Hon'ble Tribunal at length has laid down the purpose and objective of exception under the law and given sufficient guidelines to the Designated Authority in this regard.

xix. The Designated Authority may consider its own current practice wherein specific anti-dumping duties are recommended only in respect of companies who have exported the product during the relevant period and the same are not extended to the related companies of such producer having individual duties. The current interpretation drawn by the Designated Authority will lead to a situation whereby a group having more than one manufacturing company in a foreign country would have duties only on the group company who had exported the product during relevant period and all other group companies shall be forbidden forever from exporting their products in the Indian market only because of their "relationship" with the company who had exported during the relevant period.

xx. The Designated Authority has also ignored that if a word has been defined under the rules for any particular purpose, the same is not only relevant but also binding, or, at the least, guiding in interpreting the same word appearing at other places in the same rules. Thus, Rule 22 and rule 2(b) both refer to the word "related" and therefore the Designated Authority should rely upon or refer to or seek strength from the definition of 'related' as specified under the rule 2(b) for the purpose of Rule 22. Assuming but not admitting that the Designated Authority is justified in interpreting so, the applicants submit that if the definition of related parties under 2(b) cannot be applied, then the definition of related party appearing under accounting standards or any other statute should be considered as relevant and useful in deciding the meaning of "related" and if even that is considered inapplicable, then the purpose and the objective of the provision should be kept in mind while interpreting the word. The Designated Authority should not hold that there is no necessity of defining the word 'related' for the present purpose and thus not only leave the present investigation, but also all possible future investigations in limbo. The Designated Authority is required to provide guidelines, while deciding the present case, to the Indian consumers and foreign

producers for utilizing the relevant legal provisions in future. Since the objective of the exception provided under Rule 22 is to prevent abuse of the provision by those erring foreign producers subjected to anti-dumping duties, the Designated Authority should examine the nature of relationship between the parties in the present case, evidence of such relationship, conduct of business of such parties, eligibility of such companies and rights to trade conferred on the parties.

xxi. The Designated Authority may also note that the alleged relationship did not exist during the current relevant period which is the most fundamental consideration. Further, even during the period of earlier investigation, the alleged relationship did not exist between the producer who were exporting the product in that period and the applicant companies.

xxii. The petitioner has imported significant volumes of the product under consideration and the present misinterpretation of law would cause significant irreparable financial loss to the applicant group companies. Further, if the applicant companies are not given their individual duties, they would be subjected to pay residual anti dumping duties, for no fault of theirs and even when the group cooperated with the Designated Authority at the time of original investigations and at present.

xxiii. Under Rule 22, the Authority is required to consider two parameters:

- a. Applicant should not have exported the product to India during the original investigation period –this requirement is with regard to the original investigation period;
- b. The applicant should not be related to exporters or producers who are subject to anti-dumping duties – this relationship must be examined with reference to the POI now chosen by the Designated Authority. There is nothing under 22 which can be read to imply that this relationship should not have existed at the time of original investigation period. The relationship is required to be considered at the time of New Shipper period of investigation. Consider the following situations :
 - Consider the situation where a joint venture company (C) is formed by two multinational companies (say, A and B). This joint venture company manufacturers and exports the products to India and attracts anti-dumping duties as a result of such dumping. Further, consider that after some time, the two multinational companies come to a decision to sell off this company. There can be two situations – where the company A sells off entire investments to company (B) or where the same is sold to another company (D). In either situation, company (A), who was not a manufacturing company, now sets up its own manufacturing facility, say company (E). This company

(E) now files an application before the Authority for its own dumping margin. It cannot be said that company (E) is not entitled for its own dumping margin for the reason that the joint venture company C is subject to anti-dumping duties, unless the Authority comes to a conclusion that the entire objective of sale of investment by the two companies is to circumvent the duties imposed in India.

- Consider the situation where a producer company (A) is exporting its products through (a) related trading company B and (b) unrelated trading company C. Due to dumping resorted, the producer company A attracts anti-dumping duties as a result of such dumping. As a result of such imposition of anti dumping duty, the company C now forms another company, Company-D and wishes to export the product through this newly formed company-D. Or there could be another situation, where another producer company in the group, say, company E exists and it is decided to circumvent the high quantum of anti dumping duty by forming a new trading company F. It cannot be said that such other producer company-E is entitled for its own dumping margin.

xxiv. A perusal of the document makes it evident that while holding relationship, the Designated Authority has given no reasons on the basis of which it has determined that these two companies are indeed related companies. The Designated Authority cannot come to a conclusion without giving adequate reasons. Not only that the principles of natural justice demand that the Authority give a reasoned order, Rule 17 makes it evident that the final findings issued by the Authority should contain adequate reasons for the conclusion. Therefore, the Designated Authority should give adequate reasons for holding relationship between the two companies.

xxv. The Authority should apply the definition of related party as given under Rule 2(b) of Customs Tariff (Anti Dumping) Rules 1995 in the absence of any other express definition under the law. The word “related” has not been defined under Rule 22. Further, barring Rule 2(b), elsewhere also the word related has not been defined under the law. It is a well settled legal position that in case one word has been used at multiple places in a law, the same meaning must be assigned to the word as has been specifically assigned under the rules. Since in the context of Rule 2(b), the word related has been defined, the same definition should be applied for the present purpose as well.

xxvi. The definition of related under Rule 2(b) is not only pertinent but also directly relevant. It is important to note in this regard that the purpose of defining related under Rule 2(b) with regard to the issue of relationship between a domestic producer and importer/exporter. Given the objective of possible exclusion of such related companies, it follows that Rule 2(b) seeks to exclude those companies who are having such “relationship” with a domestic producer as would adversely impact the scope of the domestic industry. For

instance, a company may be related to a foreign producer and therefore may not wish to support a petition. Therefore, the rules have been amended to authorize Designated Authority to exclude such companies so that other genuine domestic producers are not prevented from bringing an application. Similar is the position with regard to related importer. Thus, the objective of defining relationship under Rule 2(b) is to authorize the Designated Authority to exclude such companies whose relationship may frustrate the objective of the law. In the same way, the objective of exclusion provided under Rule 22 is to authorize the Designated Authority to exclude such companies whose relationship may frustrate the objective of the law. Such being the case, definition under Rule 2(b) is directly relevant and in fact highly pertinent for the provisions of Rule 22.

xxvii. Accounting Standard 18 (AS18) is directly relevant in the present case for multiple reasons. Firstly, since the entire issue has arisen because of the disclosures by the parties either in the annual report or stock exchanges, the definition under accounting standards is highly relevant. Secondly, since the issue concerns relationship between companies, definition under accounting standards is most relevant. Thirdly, the said accounting standard defines related party and parties with significant influence. Fourthly, either the Authority considers the definition of related party under dumping law itself or holds that the said definition is not relevant. As per the definition of related party under Accounting Standard 18, parties are considered to be "related parties" if at any time during the reporting period one party has the ability to control the other party or exercise significant influence over the other party in making financial and/or operating decisions. Further, "significant influence" as per Accounting Standard 18 means participation in the financial and/or operating policy decisions of an enterprise, but not control of those policies.

xxviii. It is evident from the above that the word "related" and "significant influence" are two different words defined under the same Accounting Standards and therefore the two do not mean the same. Further, the mere fact that a company has significant influence over other does not mean that the two are related.

xxix. The Designated Authority has not given any reasoning on why definitions given under accounting standards are not relevant or applicable. This is all the more relevant and important for the reason that (i) what is relevant to the Authority is control (and not significant influence), (ii) the Authority has considered that "control" and "significant influence" imply the same, (iii) the accounting standards clearly distinguish between "control" and "significant influence", (iv) the Authority has treated the two companies related on the basis of statements in annual reports and therefore accounting standards (under which the disclosures have been made) become directly relevant.

xxx Should the Designated Authority consider that neither definition under Rule 2(b) nor the definition under AS18 is guiding, the Designated Authority is then required to define and

consider the meaning of the word “related”. In this regard, attention of the Designated Authority is requested to the orders of the Hon’ble CESTAT in the matter of Vitrified Tiles.

xxxi. The Authority has stated that the above decision is not applicable/relevant for the reason that the same is in the context of scope of domestic industry. However, as stated hereinabove, given the objective of exception provided for the purpose of scope of domestic industry and for the purpose of new shipper review, it directly follows that the two exceptions have the same or similar objective. While under Rule 2(b) exception is provided so that (a) the domestic industry can seek protection against dumped imports, (b) those domestic producers who are related to foreign producers do not prevent others from seeking protection, (c) the injury assessment does not get distorted due to possible imports by the domestic producer itself. Similarly, under Rule 22, the exception has been provided so that a foreign producer may not seek its own dumping margin when it preferred non cooperation at the time of original investigations or to prevent circuitous route of getting individual dumping margin by using its related company.

xxxii. The Designated Authority has failed to appreciate that the applicant companies would be left in limbo in as much as these companies (i) could not have sought their own individual duty at the time of original investigation, (ii) cannot seek individual duties now through New Shipper Review, (iii) these companies cannot seek individual duties through Rule 23. It is a fundamental right of a producer to seek its own individual duties based on its own dumping margin.

xxxiii. A company which has not been in existence at the time of original investigations could not have sought such individual duty. Since the company has not exported the product to India after imposing anti-dumping duties because of existing anti-dumping duties. Because the Designated Authority considers that Rule 23 provides for full Mid Term Review, such companies cannot seek Mid Term Review under Rule 23. Therefore, if it is held that such companies are not entitled to New Shipper Review under Rule 22, the determination implies that such companies are not at all entitled for their own individual dumping margin. Even at the time of Sunset Review in future, since the Sunset Review would focus only on actual exports made in the period, such companies would not receive their own dumping duties even through Sunset Review. In other words, the determination made by the Authority would imply that companies such as applicant companies can never have their own individual duties and should invariably suffer residual duties for no fault of theirs. This is clearly beyond the mandate of the WTO Agreement which requires the WTO member countries to give individual duties to the producers/exporters who are willing to cooperate with the Authority.

xxxiv. The Authority has wrongly considered that the observations made by the CESTAT are relevant for the purposes of initiation only. The observations made by the CESTAT arose out of appeal against the final findings notified by the Designated Authority and were clearly in the context of objective and purpose of exception provided under Rule 22. There is nothing in

the order of the CESTAT which can be inferred to mean that the said observations are made in the context of initiation of investigations.

xxxv. In the present case, the shareholding of Kodak is much below the shareholding in Circular Weaving Machines case wherein the Authority has held that shareholding was not sufficient to grant legal control. The Authority has stated that the above decision is not applicable/relevant for the reason that the same is in the context of scope of domestic industry. However, given the objective of exception provided for the purpose of scope of domestic industry and for the purpose of new shipper review, it directly follows that the two exceptions have the same or similar objective. In the investigation relating to Circular Weaving Machines, the Authority has held as under with regard to relationship:

2) *The Authority notes that the key element in regard to relationship of the domestic producer and the exporter is 'control', legal or operational. The Authority finds that Starlinger, China is a 100% subsidiary of Starlinger, Austria whereby both are related companies. Further, it is evidenced that Starlinger, Austria is holding 34.67% shares in the applicant company i.e. Lohia Starlinger Limited. But mere shareholding does not amount to exercise of control and therefore does not make Starlinger, Austria and/or Starlinger, China related to Lohia Starlinger Limited (LSL) within the meaning of Anti Dumping Rules. Majority shareholding i.e. above 50% only gives legal control. Further, the Authority finds that no Director representing Starlinger, Austria has been appointed in the Board of applicant company since 2002. It is brought on record by both the parties that Starlinger, Austria has filed a Petition before Company Law Board seeking appointment of its nominee on the Board of LSL. All these establish that Starlinger, Austria has no operational control as well over LSL. Further, even if the two parties are related parties, the mere fact of relationship is insufficient to consider the domestic producer as ineligible. There must be sufficient grounds justifying exclusion of such related domestic producer. There must be evidence that the related domestic producer has acted differently due to relationship, or has participated in dumping practices and has taken such steps which would have resulted in self inflicted injury. In the instant case, there is no such evidence that the relationship between the two parties have led to petitioner behaving in a manner different from an unrelated producer. Thus, in the absence of legal or operational control by Starlinger, Austria and/or Starlinger, China over LSL and in the absence of sufficient grounds to treat LSL as ineligible domestic producer in the light of the provision contained in Rule 2(b), the Authority holds that the applicant is entitled to be treated as domestic industry within the meaning of Rule 2(b) of the AD Rules.*

View/Submissions by the Domestic Industry post First and Second Oral Hearings and post First and Second Disclosure Statements:

19. Domestic Industry has submitted as under:

i. The standard propounded in the law is 'relation' to the exporter and not of 'control'. There was an agreement between Eastman Kodak and Lucky Group signed for 20 years, with an investment of USD 1.2 billion for obtaining a stake of 20%. Secondly, there was a Director on the Board of Directors who should have control on the operations of the Joint Venture as regards the production/supply/distribution of the subject goods. With these facts in hand, it is commercially unviable to convince that the Director did not have any control on the operation of the Joint Venture specifically on the subject goods.

ii. It is incumbent on the parties to demonstrate or show that they are not related to earlier exporters or producers who are subject to anti dumping duties and it is the duty of the Authority to satisfy itself in this regard. H and R Johnson Ltd vs. DA is referred.

iii. Legislative intent behind Rule 22 has been amply clarified by the Government of India at the WTO and been detailed by the Tribunal. All attempts must be made by the DA to ensure that no circumvention of AD duties takes place by means of New Shipper Application. Therefore, if NSR is allowed to continue, then KGCCCL would be able to export the said product without paying any AD Duties, which its related companies would be liable to pay, amounting to circumvention.

iv) (a) Eastman Kodak signed a 20 year agreement with China Lucky Film Company (LFC) and held 20% stake in LFC from November 2003 to November 2007. LFC has three wholly owned Subsidiaries, namely, Second film Company (SFC), Lucky Research Institute (LRI) and Lucky Shanghai Paper Mill (LSPM). Therefore, SFC and Eastman Kodak were related companies during April 2005-March 2006 which was the original POI. SFC made exports to India during the original POI.

(b) Kodak (China) Co. Ltd. (KCL) and Kodak (China) Investment Ltd. (KICL) are principal subsidiaries of Eastman Kodak. These two jointly hold 100% stake in KGCCCL, the ostensible new shipper. Therefore Eastman Kodak and KGCCCL are clearly related companies.

(c) Therefore, KGCCCL is not qualified to file NSR as it is related to a producer/exporter, i.e., SFC, who in fact has exported the subject goods to India during the original POI from China.

v. Investigation initiated is in contravention of the Article 9.5 of AD Agreement and the Rule 22 of AD Rules.

- vi. Kodak China Investment Company Ltd., Kodak Singapore Pvt. Ltd and Kodak India Private Ltd were not even recorded as having filed for a new shipper review and cannot be investigated as they have not shown that they are not related to any of the exporters or producers in the exporting country
- vii. Kodak Singapore Pvt Ltd is related to Kodak Polychrome Graphics Singapore Pvt. Ltd through the common parent company and thus are prima facie disqualified from seeking any new shipper review.
- viii. In so far as the Indian arm of Kodak is concerned, they are the same part which was originally investigated and cannot be investigated again. Common Shareholder Company holds both the export companies in Singapore and the Indian importer.
- ix. Relationship of Kodak Polychrome Graphics Singapore Ltd with the parent company, i.e., Eastman Kodak is already admitted in the response filed by the ostensible New Shipper before the Designated Authority.
- x. Kodak (China) Graphic Communication Company Ltd (KGCCCL) is related to an exporter in the exporting country (Singapore); they prima facie do not satisfy the condition stipulated under Rule 22 for applying as a new shipper.
- xi. Reliance to the Circular Weaving Machines is clearly misplaced, as the definition of 'domestic industry' was in question. The Explanation to Rule 2 (b) as well as Footnote clearly provide that the definition of 'related' is limited for the purpose of defining related parties of the domestic industry.
- xii. The ostensible new shipper has resorted to wide spread manipulation in order to deceive the DA and continue the review.
- xiii. KGCCCL has exported to India at or above reference price since the imposition of AD Duty, even when the aluminium price has gone up, which accounts for 70-80% of the cost of finished goods. Volumes were subdued in the current POI, and immediately post the POI, volumes took a huge surge nearly seven times.
- xiv. KGCCCL in its MET Questionnaire has admitted to selling the subject goods at losses.
- xv. The New Shipper resorted to submitting that the investment made by Eastman Kodak was a mere investment and no controlling interest was given to Eastman Kodak. However, the Designated Authority has in its custody documents to irrefutably show that Eastman Kodak has significant influence over the finance and operations of LFC. Further, it is a known fact that one of the Eastman Kodak's Directors (the parent company of the New Shipper) was part of the Board of Directors of Lucky group, hence it is clearly established that Kodak had a controlling stake to the extent of dictating policies of the company.

xvi. Given the relationship between the entities, it can be clearly concluded that (a) Eastman Kodak had relationship with SFC during the original Period of Investigation; (ii) SFC had exported to India during the original period of investigation; (iii) Eastman Kodak and the New Shipper are also related companies and the New Shipper had operations set up in 2005 and (iv) these facts were concealed by the New Shipper during the said application as well as in their response to the Exporters Questionnaire and Market Economy Treatment Questionnaire.

xvii. The Designated Authority has correctly concluded that “relationship” as required in the instant case is not to be determined as defined under Rule 2(b) of the Anti-dumping Rules.

xviii. It must be emphasized that the standard propounded under Anti-dumping Law is that of “relation” to the exporter and not of “control.

xix. As regards the contention of the New Shipper regarding “significant influence” implies “authority to participate” and not “authority to give direction”, the Designated Authority has correctly held the “significant influence” of Kodak China Co. Ltd is not only over the finances but also over the finances of the LFC and is in the instant case, it implies authority to give direction to pursue the commercial goals of LFC. Therefore, the factum of “relation” as required under Rule 22 of the Anti-dumping Rules is clearly established.

xx. As regards the claim of the New Shipper that there has been no relationship after 2008 due to the disinvestment process that was completed in 2008, the Designated Authority has correctly noted that the relationship was clearly established during the original Period of Investigation, i.e., 2005-2006 which is required for the purposes of a new shipper review under Rule 22 of the Anti-dumping Rules.

xxi. The New Shipper remains a potent threat to the Domestic Industry if it is allowed to export without an antidumping duty.

xxii. The application of the New Shipper should be rejected forthwith and recommendation of the highest duties may be imposed.

Examination by the Designated Authority:

20. The Authority notes that the subject investigation was initiated after accepting, prima facie, that M/s. Kodak (China) Graphic Communications Company Ltd., China PR, the Applicant, satisfies the following conditions of the provision of Rule 22 of the AD Rules:

- a. That the Applicant had not exported the subject goods in the period of investigation of the original investigation; and

- b. That the Applicant is not related to any of the exporters/producers the subject goods in China who had exported the subject goods during the original period of investigation.

21. The Authority notes that there has been opposition by the Applicant that firstly, the Authority has wrongly interpreted Rule 2(b) of the AD Rules, its relevance and applicability to a New Shipper Review, and secondly, that after applying Rule 22 of the AD Rules to the present New Shipper Review case, the Authority has wrongly interpreted the term “related” as expressed in Rule 22 and then coming to the conclusion that the Applicant has been found to be related to an exporter who had exported the subject goods to India. The Authority notes that in this regard the Applicant has contended that:

(i) Since the word “related” has not been defined under Rule 22 of the AD Rules and barring Rule 2(b) of the AD Rules, elsewhere the term “related” has not been defined under the law, the Authority has ignored that if a word has been defined under the Rules for any particular purpose, the same is not only relevant but also binding, or, at the least, guiding in interpreting the same word appearing at other places in the same rules. In the absence of any other express definition of related party under the law, the Authority should apply the definition of the related party as given under Rule 2(b) of the AD Rules to the present case.

(ii) Both Rule 22 and Rule 2(b) refer to the word “related” and, therefore, the Designated Authority should rely upon or refer to or seek strength from the definition of ‘related’ as specified under the rule 2(b) for the purpose of Rule 22.

22. The Authority, therefore, notes that first of all the Authority has to examine the applicability of Rule 2(b) in a New Shipper Review initiated under Rule 22 of the AD Rules as contended by the Applicant. In this regard, the Authority notes that Rule 2(b) of the AD Rules defines the Domestic Industry, and the Explanation of relationship as defined in Rule 2(b) reads as under:

“Explanation.- For the purpose of this clause,-

- (i) *producers shall be deemed to be related to exporters or importers only if,-*
- a) *one of them directly or indirectly controls the other; or*
 - b) *both of them are directly or indirectly controlled by a third person; or*
 - c) *together they directly or indirectly control a third person subject to the condition that are grounds for believing or suspecting that the effect of the relationship is such as to cause the producers to behave differently from non-related producers.”*
- (ii) *a producer shall be deemed to control another producer when the former is legally or operationally in a position to exercise restraint or direction over the later.”*

23. The Authority also notes that the relevant part of Rule 22 reads as under:

“ the designated authority shall carry out a periodical review for the purpose of determining individual margins of dumping for any exporters or producers in the exporting country in question who have not exported the product to India during the period of investigation, provided that these exporters or producers show that they are not related to any of the exporters or producers in the exporting country who are subject to the anti-dumping duties on the product.”

24. From the above, the Authority determines that the relationship referred to in Rule 2(b) is specific for the purpose of establishing relationship of the domestic industry with the exporters or importers of the subject goods, whereas the relationship in a New Shipper Review to be established under Rule 22 of the Rules envisages the relationship between the exporters in the exporting country. The Authority, therefore, concludes that Rule 2(b) is not applicable in a New Shipper Review initiated under Rule 22 of the AD Rules, and as a consequence, in the context of the present case, there is no need to apply the explanation of Rule 2(b) to the set of entities requested for by the Applicant.

25. The Authority further concludes that as the New Shipper Review is initiated under Rule 22, and in Rule 22, there is already the following expression relating to relationship – *“these exporters or producers show that they are not related to any of the exporters or producers in the exporting country”* – it is required of the Authority to establish the relationship under Rule 22 and not under Rule 2(b). The Authority, thus, concludes that in the case of a New Shipper Review, the Authority has to establish the relationship under Rule 22.

26. After having concluded that in the case of a New Shipper Review, the relationship is to be established under Rule 22, the Authority notes that the Authority has also to determine the type of relationship required is to be established under Rule 22. In this regard, the Authority concludes that since the relationship in the case of a New Shipper Review is not required to be established under Rule 2(b) of the AD Rules, and the relationship is to be seen in terms of the following expression governing relationship in Rule 22 – *“these exporters or producers show that they are not related to any of the exporters or producers in the exporting country”*, the Authority is required to establish the relationship under Rule 22 by assigning simple meaning to the word “related” in Rule 22 without qualifying or elaborating the meaning any further in terms of Rule 2(b) or otherwise.

27. After having decided that in the case of a New Shipper Review, the Authority is required to establish the relationship under Rule 22 by assigning simple meaning to the word “related” without qualifying or elaborating the meaning any further, the Authority notes that it is also required of the Authority in the present case to determine two more things. Firstly, it is to be determined that the Applicant New Shipper did not export the subject goods to India during the original period of investigation. Secondly, it is to be determined that the Applicant New Shipper is also not related to an exporter or producer in the subject country who had exported the subject goods to India during the original period of investigation. With regard to

the second point, the Authority notes that the Authority is further required to determine as to whether the relationship of the Applicant New Shipper is to be established with the exporter or producer in the subject country who had exported the subject goods to India "with reference to the original period of investigation" or as contended by the Applicant "with reference to the period of investigation prospectively chosen by the Designated Authority for a New Shipper". The Authority notes that in this regard, the Applicant has submitted that the Disclosure Statement has drawn wrong interpretation of Rule 22 by examining past relationship whereas the present relationship alone is relevant; that the Disclosure Statement ignores the law and has examined the relationship in the context of original period of investigation whereas Rule 22 of the Indian Rules and Article 9.5 of the WTO Agreement provide for consideration of present relationships; that past relationships are in any case of no consequences; that the entire relationship has to be examined with reference to the current period, i.e., the investigation period chosen by the Designated Authority and that such relationship cannot be examined with regards to the investigation period of the original investigation.

28. With regard to the first point, the Authority notes that the Applicant New Shipper did not export the subject goods to India during the original period of investigation. With regard to the second point, the Authority concluded that since the New Shipper Review under Rule 22 is to be carried out for the exporters or producers in the exporting country in question who have not exported the product to India during the original period of investigation, the Applicant's relationship with the exporters or producers in the exporting country who had exported the subject goods to India is also to be determined not only in the current period of investigation as contended by the Applicant but also in the original period of investigation.

29. The Authority notes that after having decided that in the case of a New Shipper Review initiated under Rule 22, (i) the Authority is required to establish the relationship under Rule 22 and not Rule 2(b); (ii) the relationship of the Applicant New Shipper with the exporters or producers in the exporting country who had exported the product to India is to be determined not only in the current period of investigation but also in the original period of investigation, and (iii) the relationship is required to be established by assigning a simple meaning to the word "related" without qualifying or elaborating the meaning any further, the Authority further notes that now the Authority is required to establish the relationship between the Applicant M/s Kodak (China) Graphics Communications Ltd and Second Film Company, a company in China who had exported the subject goods to India during the original period of investigation.

30. With regard to the relationship between the Applicant M/s Kodak (China) Graphics Communications Ltd and Second Film Company, the Authority notes that the Applicant has contended that Second Film Company (SFC) who had exported the subject goods to India during the original period of investigation is neither related to the Applicant nor a wholly

owned subsidiary of Lucky Film Company as mentioned in the Disclosure Statements. The Applicant has presented his facts as under:

- a) Lucky Film Group Corporation (Lucky Group) is the holding company. The Lucky Film Co. Ltd (LFC) is not involved in product under consideration and is a subsidiary company of Lucky Group that has controlling ownership.
- b) Second Film Company (SFC) is a 100% wholly owned subsidiary of Lucky Group Corporation (Lucky Group) and was involved in production and sales of the product under consideration. SFC has made exports to India during the original Period of Investigation.
- c) Kodak (China) Co. Ltd. (KCL) and Kodak (China) Investment Ltd. (KICL) are principal subsidiaries of Eastman Kodak. Whereas, KCL and KICL jointly hold 100% stake in Kodak (China) Graphics Communications Ltd. (KGCCCL) i.e. the Ostensible New Shipper.
- d) Eastman Kodak is having 20% shares in Lucky film Co. Ltd (LFC) through Kodak (China) Co. Ltd. (KCL) and Kodak (China) Investment Ltd. (KICL)

31. In this regard, the Authority has re-examined the facts and also notes that during the verification of records, the Authority came across the Annual Reports of 2004 of Kodak (China) Co. Ltd and Kodak (China) Investment Co. Ltd. Some of the important issues mentioned in these Annual Reports and relevant from the perspective of this investigation are as under:

(Annual Report of *** of Kodak (China) Co. Ltd)

*"Pursuant to the Cooperation Framework Contract between Kodak and Lucky Group and the Marketing Agreement entered into between Kodak and Lucky Group and Lucky Film (collectively "Lucky") in ***, the Company should use cash, certain assets and provision of certain training services in exchange for the cooperation of Lucky with the Company, and ***% of equity shares in Lucky Film owned by Lucky Group".*

(Annual Report of *** of Kodak (China) Investment Co. Ltd)

*"Pursuant to the Cooperation Framework contract between Kodak and Lucky Group in ***, and approved by Ministry of Commerce in ***, the company acquired ***% of equity shares in Lucky Film Co Limited from Lucky Group at a cost of RMB *** in ***.*

"The company has significant influence over the finance and operations of Lucky Film, the Kodak (China) Company Limited and Kodak (Wuxi) Company Limited and therefore, it accounts for the investments in these companies using the equity method."

32. From the available facts, the Authority concludes that the relationship between the Applicant M/s Kodak (China) Graphics Communications Ltd and Second Film Company

which exported the subject goods to India during the original period of investigation is established on the basis of the following:

- (i) Kodak (China) Graphics Communications Ltd., i.e., the Applicant New Shipper, is a wholly owned subsidiary of Kodak (China) Investment Company Ltd and Kodak (China) Co. Ltd.
- (ii) Kodak (China) Investment Co. Ltd and Kodak (China) Co. Ltd are the wholly owned subsidiaries of Eastman Kodak, the Holding Company.
- (iii) Eastman Kodak held 20% shares in Lucky Film Company through Kodak (China) Investment Co. Ltd (***% shares) and Kodak (China) Co. Ltd (***% shares).
- (iv) It is recorded in the Annual Report of *** of Kodak (China) Investment Company Ltd that "Pursuant to the Cooperation Framework contract between Kodak and Lucky Group in ***, and approved by Ministry of Commerce in ***, the Company acquired ***% of equity shares in Lucky Film Co Ltd. from Lucky Group at a cost of Rmb *** in ***".
- (v) It is also recorded in the Annual Report of *** of Kodak (China) Investment Company Ltd that "The company has significant influence over the finance and operations of Lucky Film, Kodak (China) Company Limited and Kodak (Wuxi) Company Limited and therefore, it accounts for the investments in these companies using the equity method."
- (vi) From point nos (ii), (iii), (iv) and (v) above, relationship between Kodak (China) Investment Company Ltd and Kodak (China) Co Ltd on one side and Lucky Film Company on the other side is established.
- (vii) Lucky Group, China PR (China Lucky Group Corporation), which was established as a state owned company, is the Holding Company, having controlling ownership over Lucky Film Company.
- (viii) Lucky Group, China PR was also having a wholly owned subsidiary - Second Film Company.
- (ix) From point nos (vii) and (viii) above, relationship between Lucky Film Company and Second Film Company is established.
- (x) As the relationship between Kodak (China) Investment Company Ltd and Lucky Film Company has been established; and Kodak (China) Graphics Communications Ltd., i.e., the Applicant New Shipper, is a subsidiary of Kodak

(China) Investment Company Ltd, the relationship between Kodak (China) Graphics Communications Ltd., - the Applicant New Shipper and Lucky Film Company also stands established.

- (ix) Further, since the relationship between Lucky Film Company and Second Film Company has also been established, the relationship between Kodak (China) Graphics Communications Ltd.,- the Applicant New Shipper and Second Film Company stands established too under Rule 22 by assigning a simple meaning to the term "related" as is required under Rule 22.

33. The Authority notes that there are some other issues also which have been raised by the Applicant in its submissions. In this regard, the Authority notes the following:

34. The Authority notes that the Applicant has contended that the nature of review under Rule 22 is case specific with the purpose of determining individual margins for such exporter/producer, and no full-fledged investigation, as is required for imposing the anti-dumping duty, is contemplated under Rule 22. The proceedings under Rule 22 are initiated after it is shown to the Designated Authority that such exporter/producer is not related to any exporters/producers in the exporting country who exported during the period which was the subject matter of the investigation under Rule 5.

35. With regard to the above contention, the Authority concludes that determination of relationship under Rule 22 is certainly case specific and requires proper examination of the relationship in a particular New Shipper Review case. Accordingly, the Authority has determined the relationship in the present case under Rule 22 and come to the conclusion that by assigned simple meaning to the word "related" without qualifying or elaborating it in detail, the Applicant has been found to be related to an exporter who had exported the subject goods during the original period of investigation.

36. The Authority notes that the Applicant has contended that the objective and purpose of the word "related" is to see whether potentially circumventing relationship exists through whom the anti-dumping duties already imposed might be circumvented, for example, by creating a "shell" company or appointing a sole agent for the product.

37. With regard to the above contention, the Authority reiterates that under Rule 22 the Authority is required to assign simple meaning to the word "related" without qualifying or elaborating the type or purpose of relationship in detail and accordingly, the Authority has come to the conclusion that by the simple meaning of the word "related" in terms of Rule 22, the Applicant is related to an exporter who had exported the subject goods during the original period of investigation.

38. The Authority notes that the Applicant has contended that the Authority has wrongly interpreted Rule 22 and the cases of only those who did not export the product to India during the period of investigation are required to be reviewed for determining their individual dumping margins, if they are not 'related'.

39. With regard to the above, the Authority reiterates that the Authority under Rule 22 is required to assign simple meaning to the word "related" without qualifying or elaborating the relationship in detail and accordingly, the Authority has come to the conclusion that by the simple meaning of the word "related" in terms of Rule 22, the Applicant is related to an exporter who had exported the subject goods during the period of investigation.

40. The Authority notes that the Applicant has contended that the Authority has not appreciated the difference and significance of the terms "significant influence" and "control" and also ignored the definition of related parties under Accounting Standards which also establishes that the two companies are not related. The Applicant has contended that mere "significant influence" per se does not tantamount to relationship in terms of object and purpose of Rule 22 of the Anti-dumping Rules. The Authority notes that with regard to "significant influence", the Applicant has contended that (i) control implies "authority to give direction" while significant influence implies "authority to participate", (ii) the Authority has equated "authority to participate" with "authority to give direction" and (iii) the authority to participate is entirely irrelevant when such authority lacks authority to give direction. The Authority further notes that the Applicant has also contended that the Authority has chosen to rely only upon the statement made by one company (Kodak) and chosen to ignore the statement made by the other company (Lucky).

41. With regard to the above contention of the Applicant, the Authority notes that "significant influence" as mentioned in the Annual Report of *** of Kodak China (Investment) Ltd is not only over the finances but also the operations of Lucky Film Company. Therefore, the Authority, after considering the statements made by both the companies, concludes that it is logical to say that in the case of a commercial venture, significant influence over the finances and operations of a commercial venture does amount to the authority to give direction to pursue the commercial goals of that venture. To that extent, the Authority concludes that the relationship is established.

42. The Authority notes that the Applicant has contended that assuming but not admitting that if the definition of related parties under 2(b) cannot be applied, then the definition of related party appearing under accounting standards or any other statute should be considered as relevant and useful in deciding the meaning of the term "related".

43. With regard to the above, the Authority notes that "significant influence" as per Accounting Standard 18 means participation in the financial and/or operating policy decisions of an enterprise, but not control of those policies. The Authority notes that

“significant influence” as mentioned in the Annual Report of *** of Kodak China (Investment) Ltd is not only over the finances but also the operations of Lucky Film Company. Therefore, even as per the definition of related party under Accounting Standard 18, the Authority reiterates that it is logical to say that in the case of a commercial venture, significant influence over the finances and operations of a commercial venture does amount to the authority to give direction to pursue the commercial goals of that venture. Thus, Kodak China (Investment) Ltd has significant influence over Lucky Film Company as the company has significant influence over the finance and operations of Lucky Film Company.

44. The Authority notes that the Applicant has also argued that the petition did not bear a mention of the exporter Second Film Company who had exported the subject goods to India during the original period of investigation because the Applicant was not related to Second Film Company (belonging to the Lucky Group) and, therefore, the names of these companies were not given in the petition by the Applicant.

45. With regard to the above contention of the Applicant, the Authority notes that (i) the Applicant company is a fully owned subsidiary of Kodak (China) Company and Kodak (China) Investment Company; (ii) the Annual Report of Kodak (China) Investment Company for the year *** clearly states that the Company had significant influence over the finance and operations of Lucky Film, the Kodak (China) Company Limited and Kodak (Wuxi) Company Limited and, therefore, it accounted for investments in these companies using the equity method; (iii) China Lucky Group Corporation (Lucky Group) has management control over Luck Film Company; (iv) Second Film Company is a fully owned subsidiary of the Lucky Group; (v) Second Film Company and Lucky Film Company are clearly related Companies; and (vi) Second Film Company had exported the subject goods to India during the original period of investigation. The Authority concludes that based on the above mentioned evidence establishing relationship, the Applicant should have known that all these facts relating to relationship needed to be disclosed in the first instance in the Petition itself. The Authority notes that these names came to the notice of the Authority only by way of submissions made by the domestic industry and subsequent verification of records.

46. The Authority notes that the Applicant has also argued that the current interpretation drawn by the Authority will lead to a situation whereby a group having more than one manufacturing company in a foreign country would have duties only on the group company who had exported the product during relevant period and all other group companies shall be forbidden forever from exporting their products in the Indian market only because of their “relationship” with the company who had exported during the relevant period.

47. With regard to the above contention, the Authority reiterates that it has to go by the simple meaning of the word “related” as mentioned in Rule 22, and by this interpretation, the Authority has already concluded that the relationship between the Applicant New Shipper

and Second Film Company who had exported the subject goods to India during the original period of investigation existed.

48. The Authority notes that the Applicant has also sought to rely upon the Hon'ble CESTAT judgment in the case of Vitrified Tiles to urge the Authority to determine the issue of relationship. The operational part of the said judgment is reproduced below:

"The designated authority must rule out any possibility of abuse by an adequate investigation into the genuineness of the 'new shippers' and their not being related to the exporters or producers in the exporting country who are subject to the anti-dumping duty on the product. The very initiation of review under Rule 22 for determining the individual margins of the new exporters/producers would depend upon their showing that they are not "related". This is clear from the words ".....provided that these exporters or producers show that they are not related....." Therefore, until they show that they are not "related", the designated authority will normally not initiate the review. Having regard to the possibility of abuse of the "New Shipper" review rule, the designated authority is bound to consider whether the new shipper seeking review under Rule 22 is "related" or not."

49. With respect to the above referred judgement of the Hon'ble Tribunal, the Authority notes that the judgement requires the Authority to ensure that the Applicant New Shipper is not related to an exporter or producer of the subject goods to India under Rule 22 of the AD Rules, which the Authority is in any case duty bound to determine under Rule 22 of the AD Rules.

50. The Authority notes that the Applicant has also argued that in the present case, the shareholding of Kodak is much below the percentage of shareholding in the Circular Weaving Machines case wherein the Authority has held that mere shareholding does not amount to exercise of control within the meaning of Anti Dumping Rules and that majority shareholding, i.e., above 50% only gives legal control. The Authority also notes that the Applicant has contested that the decision of the Authority that the Circular Weaving Machines case is not applicable/relevant in the case of a New Shipper Review for the reason that the same is in the context of scope of the domestic industry is wrong because given the objective of exception provided for the purpose of scope of domestic industry and for the purpose of new shipper review, it directly follows that the exception has the same or similar objective.

51. With regard to the above contention, the Authority reiterates that as the decision in the Circular Weaving Machines case is in the context of scope of the domestic industry, it cannot be made applicable to the present case wherein the relationship is to be determined under Rule 22 of the Rules.

52. The Authority notes that the Applicant has also contested that even if it is assumed that there was relationship earlier, the fact is that Kodak in August 2006 had communicated to the Lucky Group about its intention to disinvest; had sold in November 2007 all its investments in the Lucky Film Company Limited; in January 2008, the disinvestment process was completed and, therefore, there was no relationship after January 2008; and such being the case, the question of exercising restriction or direction cannot arise. It is, therefore, evident that there was only a paper relationship in the intervening period.

53. With regard to the above contention of the Applicant, the Authority notes that the decision to divest was communicated only in August 2006 which shows that there was relationship during the original period of investigation, i.e., 2005-06.

Conclusion and Recommendation:

54. Based on the above, the Authority concludes that :

- (i) The relationship referred to in Rule 2(b) of the AD Rules is specific for the purpose of establishing relationship with the domestic industry and has nothing to do with establishing the relationship for the purpose of Rule 22 of the AD Rules.
- (ii) For the purpose of determining relationship in a New Shipper Review, the Authority is required to establish relationship under Rule 22 of the Anti Dumping Rules.
- (iii) In a New Shipper Review, the Authority is required to establish relationship under Rule 22 of the AD Rules by relying only upon the simple meaning of the term related and the Authority is not required to qualify or quantify such relationship any further.
- (iv) Since the New Shipper Review under Rule 22 is to be carried out for the exporters or producers in the exporting country in question who have not exported the product to India during the original period of investigation, the Applicant's relationship with the exporters or producers in the exporting country who had exported the subject goods to India is also to be determined not only in the current period of investigation as contended by the Applicant but also in the original period of investigation.
- (v) The relationship between the Applicant M/s Kodak (China) Graphic Communications Company Ltd., China PR, claiming to be a New Shipper, and Second Film Company who had exported the subject goods to India during the original period of investigation is established within the meaning of the term "related" under Rule 22 of the AD Rules.
- (vi) Based on the facts as narrated above and the legal position, the Authority concludes that the Applicant M/s Kodak (China) Graphic Communications Company Ltd., China PR, cannot be treated as a New Shipper under Rule 22 of the Anti Dumping Rules and is, therefore, not entitled to individual dumping margin.

55. An appeal against the order of the Central Government arising out of the present order shall lie before the Customs, Excise, and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority